भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 | **सितम्बर** 2010 | **अंक** 9

पुस्तकें विद्वानों को दिया जाने वाला सर्वोत्तम उपहार, मगर मूर्खों को मिलने वाला सबसे घटिया तोहफा होती हैं।

✺ ✺ ✺

पुस्तकें सहृदय मित्र की भाँति होती हैं, वे इस बात का अहसास हमें बिना लज्जित किये कराती हैं कि हमारा ज्ञान अधूरा है।

✺ ✺ ✺

पुस्तकें अच्छी पथ प्रदर्शक होती हैं
वे रास्ता दिखाती हैं, मगर उस पर चलने के लिए बाध्य नहीं करती हैं।

✺ ✺ ✺

मूर्ख पुस्तकों में खामियाँ खोजते हैं विद्वान उनका लुत्फ उठाते हैं।

✺ ✺ ✺

पुस्तकों से पुस्तकों का परिचय उसी प्रकार होता है जैसे पुराने मित्रों के जरिये नये मित्रों का।

✺ ✺ ✺

पुस्तकें पारस पत्थर होती हैं। अपने ज्ञान के स्पर्श से वे इन्सान को सोना ही नहीं, बल्कि, दूसरा पारस पत्थर बना देती हैं।

✺ ✺ ✺

अच्छे विषय पर किसी भी पुस्तक को पढ़ने के बजाय, किसी विषय की अच्छी पुस्तक को पढ़ना बेहतर चुनाव होता है।

✺ ✺ ✺

पुस्तकों पर छपी कीमत से भ्रमित नहीं होना चाहिए, बुरी पुस्तक सस्ते दामों में भी मंहगी होती है, अच्छी पुस्तक ऊँचे मूल्य में भी सस्ती होती है।

✺ ✺ ✺

पुस्तकें ज्ञान का अक्षय पात्र होती हैं उनमें से चाहे जितना ज्ञान निकाल लो, कभी खाली नहीं होता है।

✺ ✺ ✺

महान सम्राटों को भुला दिया जाता है, महान पुस्तकें और उनके रचनाकारों को हमेशा याद किया जाता है।

✺ ✺ ✺

सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य उसमें लिखे एक वाक्य से वसूल हो जाता है।

— राजेन्द्र केडिया

उत्सव-निषेध : एक संकल्प

हर साल की तरह इस बार भी, इसी महीने में 'राजभाषा' संकीर्तन की गूँज सुनायी पड़ेगी। विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों के प्रशासनिक कार्यालयों में 'राजभाषा-पखवारा' या इसी सिलसिले में कोई जश्न मनाया जायेगा, बैठकें और परिचर्चाएँ होंगी, भाषा-प्रयोग की प्रगति का लेखा-जोखा पेश किया जायेगा, बड़े-बड़े दावों के साथ संकल्प पारित किये जायेंगे। इस राष्ट्रीय-उत्सव के बावजूद आज तक 'सम्पर्क-भाषा' के रूप में इस्तेमाल की जाती बेचारी 'राजभाषा' को 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा दिलाने का न कोई राष्ट्रीय-संकल्प होगा, न ही कोई ठोस पहल की जायेगी।

व्यापक भारतीय परिदृश्य में वर्तमान 'राष्ट्रीयता' की अवधारणा का उद्‌भव हमारे स्वातंत्र्य संघर्ष के बीच हुआ। इस विशाल राष्ट्र में कई समृद्ध भाषाएँ और भाषा-समूह हैं। 'दस कोस पर पानी बदले बीस कोस पर बानी' जैसी कहावत वाले भारतीय भूगोल में भी एक-दूसरे को जोड़ते हुए हमारी भाषा ने हमेशा से सम्पर्क बनाने का काम किया है। संघर्ष के दरम्यान प्रत्येक क्षेत्र के विभिन्न भाषा-भाषी राष्ट्रीय नेताओं ने भाषा की इस शक्ति को पहचाना और सभी ने उसको 'राष्ट्रभाषा' पद पर स्थापित करने की वकालत की। किन्तु हाय रे दुर्दैव, कि सर्वतंत्र स्वतंत्र, सार्वभौम राष्ट्र होकर हम गुलामी की भाषा बोलने को विवश हैं। अपनी 'हिन्दी' के इस राष्ट्रीय दुर्भाग्य पर करुण-क्रंदन करने, आक्रोश व्यक्त करने, देश-विदेश में उसके शिक्षण-प्रशिक्षण और प्रचार-प्रसार का ढिंढोरा पीट-पीट कर उसका जश्न मनाने के लिये हमने एक तारीख़ तय कर ली है। इस बार भी हम यही करेंगे, जश्न मनायेंगे, 'हिन्दी' को 'एनज्वॉय' करेंगे।

वस्तुत: भाषा के साथ उसकी सांस्कृतिक अवधारणाएँ जुड़ी होती हैं। आज समग्र भारत जिस पश्चिमीकरण की चपेट में है वह पिछले चार दशकों की देन है। शुरू के दो दशक संघर्ष की राष्ट्रीय-भावना के अनुसार राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को सम्यक् प्रारूप प्रदान करने में लगे। इस दौरान भी बुद्धिजीवी नेताओं के पारस्परिक-संवाद, पत्र-व्यवहार, कार्यक्रम की प्रायोजना आदि को व्यावहारिक-स्तर पर 'बिदेसिया' का ही आधार प्राप्त था। इस अंतर्धारा को लक्ष्य करते हुए प्रशासनिक अधिकारियों और बड़े पूँजीपतियों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में न केवल अंग्रेजी को ज्यों-का-त्यों स्थापित रखा बल्कि उसे सुदृढ़ बनाने के लिये कुछ नये अंग्रेजी-माध्यम के स्कूल खोल दिये। पहले तो इस तरह के स्कूल सिर्फ दिल्ली और मुम्बई में ही दिखलायी पड़े, अब तो यह देश के हर गली-कूचे में स्थापित हो चुके हैं।

चूँकि हमने आज़ादी में केवल 'भौगोलिक-राष्ट्रीयता' को ही स्वीकार किया है न कि भारतीय-भूगोल को प्राचीनकाल से ही एकसूत्र में बाँधने वाली 'सांस्कृतिक-राष्ट्रीयता' को। परिणाम सामने है, पिछले तीन दशकों में विकसित शिक्षा-प्रणाली देश और दुनिया की ज़रूरतों के अनुसार पाठ्यक्रमों का निर्धारण करती है, छात्रों को नवीनतम सूचनाओं, आविष्कारों से परिचित कराते हुए उनके प्रयोग, उपयोग के साथ-साथ परीक्षाओं द्वारा उन्हें योग्य, योग्यतम बनाती है ताकि वे समृद्ध बनें, देश को समृद्ध बनायें। किन्तु विडम्बना यह कि खोखली होती

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

है यह समृद्धि, खाली रहता है हृदय का आकाश और अँधेरे में डूब जाता है चेतना का क्षितिज; क्योंकि इस शिक्षा-प्रणाली में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना के विकास की कोई प्रेरणा नहीं, कोई दिशा नहीं।

दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में अच्छे वेतनमान द्वारा शिक्षकों के लिये 'नौकरी' को एक सुरक्षित-क्षेत्र बना दिया गया है जहाँ नौकरी बजाने के सिवा अध्यापकों का अपने छात्रों के प्रति कोई दायित्व नहीं है। वहीं निजी विद्यालयों में अपेक्षाकृत आधे या चौथाई वेतनमान के बावजूद शिक्षक अपने दायित्व के मानदण्ड पूरे करते हैं और उन विद्यालयों के छात्र प्रतिस्पर्धा में अव्वल रहते हैं। इस विसंगति को दूर करने का प्रयत्न सरकारी, गैर-सरकारी स्तर पर किया जाना अनिवार्य है अन्यथा देश का विशाल सुशिक्षित युवा-समूह दिग्भ्रांत होकर, मानसिक-कुंठा और आत्म-यंत्रणा से ग्रस्त हो जायेगा। अत: आवश्यक है कि अपनी भाषा में ही देश की युवा-पीढ़ी का राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास किया जाये। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर प्रस्तावित पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त साहित्य-संगीत-कला आदि मानवीय/सांस्कृतिक विषयों के पाठ्यक्रम भी निर्धारित हों, जिनमें नूतन-सर्जन की अन्त:प्रेरणा हो। साथ ही यह भी कि प्रतिस्पर्धी-परीक्षाओं में इस अतिरिक्त विषय के प्राप्तांक और योग्यता को 'वेटेज' प्रदान किया जाये, उन्हें पुरस्कृत किया जाय, तभी 'निज-भाषा' में शिक्षा और राष्ट्रीय-संस्कृति के आत्मगौरव का बोध होगा।

बात शुरू हुई थी 'राष्ट्रभाषा/राजभाषा' के वार्षिक-संकीर्तन से, सो इसी भाषा में शिक्षा और संस्कृति के गलियारों से घूमते हुए हम फिर आ पहुँचते हैं संकीर्तन में। इस 'हिन्दियाना-जश्न' के चौतरफा गूँजते शोर से अलग हम कहना चाहते हैं कि राष्ट्रभाषा के नाम पर यह वार्षिक-संकीर्तन बन्द करें और संकल्प लें कि जब तक 'हिन्दी' को उसका संवैधानिक-प्राप्य नहीं मिलता तक तक कोई उत्सव नहीं मनायेंगे बल्कि भाषा के इस अन्त:-संघर्ष के निदान और समाधान की प्रगति का वार्षिक आकलन करते रहेंगे।

इसी क्रम में याद आता है अतीत का एक क्षण सन् 1947 में आज़ादी मिलने के तुरन्त बाद एक ब्रिटिश पत्रकार ने महात्मा गाँधी का साक्षात्कार लिया, युग पुरुष ने छूटते ही कहा ''जाकर दुनिया को बता दो कि गाँधी अंग्रेजी भूल गया है।''

सर्वेक्षण

● **खेल-खेल में खेल हो गया :** 'माननीय महोदय' ने दूर की सोची और एक बृहद् आयोजन की भनक मिलते ही बिना किसी अनुबन्ध के कुछ भुगतान भी कर दिये और 'कमीशन' निश्चित करते हुए औपचारिक तरीके से अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर पर व्यावसायिक करार भी कर लिये। 'माननीय' के मौखिक वादों और लिखित शर्तों की जब परतें उधेड़ी जाने लगीं तब तक राष्ट्रीय राजधानी के स्टेडियम खुदे हुए अखाड़ों में तब्दील हो चुके थे। अब, जबकि राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन में बहुत कम समय रह गया है। इन तथाकथित 'माननीयों' की खिसियाहट और झेंप-भरी मुस्कानें दूरदर्शन और अखबारों में देखकर ''मुबारिक कह नहीं सकता, मेरा दिल काँप जाता है।''

●● **संगे-आज़ादी :** कश्मीर की प्राचीन राजधानी 'पुराधिष्ठान' (वर्तमान—पंडरेथन) से कुछ दूर 'सती-सरोवर' (वर्तमान—डलझील) के किनारे मौर्य कुमार अशोक ने 'श्रीनगर' को नयी राजधानी के रूप में स्थापित किया था। तब से आज तक 'कश्मीर' भारत-राष्ट्र का हिम-किरीट बना हुआ है। इस दीर्घ अवधि के बीच दसवीं सदी तक के सांस्कृतिक-उत्थान और तत्पश्चात् उथल-पुथल, धर्मान्तरण, सत्ता परिवर्तन आदि के बावजूद सामान्य कश्मीर-जन शान्तिप्रिय और विकासशील रहे हैं। दुर्भाग्य से भारतीय-क्षेत्र के विभाजन को लेकर बनायी गयी ब्रिटिश-राजनीति का अभिशाप आज भी झेलने को विवश हैं कश्मीर-जन। एक ओर पाकिस्तान की धार्मिक-सत्ता के सैन्य-षडयंत्र-आतंक, आक्रमण आदि और दूसरी ओर भारत सरकार द्वारा रक्षात्मक-प्रतिरोध के बीच पिछले साठ साल से डाँवाडोल कश्मीर-जनगण बेचैन हो उठे हैं। इसी बेचैनी का नतीजा है कि वहाँ की नौजवान पीढ़ी ने वास्तविक आज़ादी की जद्दोजेहद में आज पत्थर उठा लिये हैं। प्रत्येक प्रशासनिक-प्रतिबन्ध के विरोध में पथराव कर रहे हैं औरतें बच्चे-किशोर-युवा। आँसू-गैस, लाठी-चार्ज के बाद भी न मानने पर प्रशासनिक गोलियों से शहीद होते हैं हमारे अपने कश्मीरी बच्चे, नौजवान और इसी के समानांतर सरहद पर या कश्मीर की बस्तियों के बीच शहीद होते हैं हमारे ही बहादुर सिपाही। आखिर कब तक अपनों का ही लहू पीती रहेगी यह कुटिल राजनीति? अब भी समय है कि सुदृढ़ राजनीतिक-इच्छाशक्ति के साथ कश्मीर के विलयन सम्बन्धी की गयी अतीत की गलतियों का निराकरण किया जाय और प्रतिपक्ष की महत्वाकांक्षाओं को कुचलते हुए कश्मीर के जनगण को राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल किया जाय, अलगाववादियों को काबू में लेकर कश्मीर के समग्र विकास की प्रक्रिया शुरू हो ताकि आतंक और खून-खराबे से मुक्त कश्मीर के स्वर्गिक-सौन्दर्य से अभिभूत गुनगुनाता रहे हमारा जन-गण-मन—

''अगर फ़िरदौस बररुए ज़मींनस्त
हमींनस्त हमींनस्त हमींनस्त।''

—परागकुमार मोदी

पृष्ठ 3 का शेष

ही तूती बोलती है। नाम भारत के पौराणिक युग का देकर, किस्सा भारतीय जवाहरलाल की झोली से निकालकर विलायत के ठग, लुटेरे और बदमाशों की काली करतूतों के जामे पहनाये जाते हैं। वहाँ समय खोना मैं पसन्द नहीं करता। बाजारू प्रेम की पच-पचाहट में लदफद होकर लुढ़कने के सिवाय और कुछ नहीं है।

मुझे खेद है कि आपकी ऊँची अभिलाषा की पूर्ति मैं नहीं कर सका। आपकी जो ऊँची जिज्ञासा, माननीय गवेषणा से भरी है इसका समाधान मैं न कर सका। इसके लिये क्षमा करेंगे ऐसी मुझे आशा है। मैंने अपनी जानकारी भर की जो कुछ याद है वही कहा है।

—**गोपालराम,** गहमर निवासी

गोपाल राम गहमरी के पत्र में भारतेन्दु का रंगमंच

गोपाल राम गहमरी का एक महत्त्वपूर्ण पत्र 'साहित्य सन्देश' के जनवरी सन् 1952 के अंक में मिला है। यह पत्र भारतेन्दुकालीन रंगमंच के विषय में है और डॉ० सत्येन्द्र एम०ए०, पी-एच०डी० के विस्तृत आलेख का एक अंग है। आलेख का शीर्षक है 'भारतेन्दुयुगीन रंगमंच : स्वर्गीय गहमरीजी की साक्षी'। इस आलेख में गम्भीरता से मंथन करने के बाद लेखक ने उन कारणों की खोज की है जिनके चलते हिन्दी रंगमंच विकसित नहीं हो सका और भारतेन्दु कालीन उद्योग विफल हुए। इनमें प्रमुख कारण यह था कि हिन्दी साहित्यकारों में नाटक सम्बन्धी चेतना विकसित होने के पूर्व ही हिन्दी-क्षेत्र में व्यवसायी रंगमंच चल पड़ा। इसी प्रकार आर्थिक सहायता का अभाव, आर्य समाजी सुधारवादी चेतना तथा बंगला रंगमंच की तुलना में हिन्दी रंगमंच की कमजोरी आदि कारणों की चर्चा करते हुए डॉ० सत्येन्द्र ने इस सम्बन्ध में एक प्रश्नावली गोपाल राम गहमरी को भेजी थी जो इस लेख में दी गयी है। यहाँ उस विस्तृत आलेख में से लेकर भारतेन्दुकालीन रंगमंच सम्बन्धी प्रश्नावली और गोपाल राम गहमरी के उत्तर को प्रस्तुत किया जा रहा है। भारतेन्दु के नाटकों, उनके द्वारा अभिनय और उस काल के रंगमंच के विषय में इससे 'भारतीय वाङ्मय' के पाठकों को कुछ नयी जानकारी मिल सकेगी।

—विवेकी राय

प्रश्नावली— *स्टेज कैसी होती थी? वह किसके अनुकरण पर बनायी गयी? उसके लिए धन कहाँ से आता था? अभिनय की शिक्षा का क्या प्रबन्ध होता था? कैसे-कैसे दृश्य दिखाये जाते थे? उनमें किस वस्तु का विशेष ध्यान रखा जाता था? अभिनेता कौन-कौन तथा किस कोटि के होते थे? किस-किस ने अपने अभिनय में और अभिनय की किस विशेषता में विशेष नाम पाया था? उन अभिनयों के सम्बन्ध में साधारण मत क्या होता था? वे अधिक प्रचलित क्यों न हुए? कौन-कौन और कहाँ कहाँ उनकी कम्पनियाँ या पार्टियाँ खुलीं? कहाँ कहाँ अभिनय हुए?*

प्रिय महाशय,

आपका कार्ड ता० 24-2-38 का पढ़ा। आप भारतेन्दुकालीन नाटकों का अभिनय जानना चाहते हैं। उस समय के स्टेज और अभिनेताओं की बात पूछते हैं। मुझसे आप यह समझ कर कि मैंने उन दिनों के नाटक देखे होंगे और आजकल के भी देखते होंगे आपकी इच्छा और अनुमान, दोनों का मैं स्वागत करता हूँ। लेकिन अफसोस की बात यह है कि मैं दोनों ही से दूर रहा। उन दिनों भी मैं नाटक नहीं देखता था और आज भी नहीं देखता। इसका अभिप्राय यह नहीं कि मुझे उनसे अरुचि या घृणा रही हो, न यही मतलब है कि मुझसे पाठकों से छूआछूत ही नहीं है।

उन दिनों भी कोई आग्रह अथवा सम्मान से ले गया तो चला गया। अब भी किसी संगति में पड़ा तो चला गया। हाँ! उन दिनों कलकत्ता, बम्बई या हरिद्वार कुम्भादि पर्व पर नाटकों में जाना पड़ा और यहाँ दस-बारह वर्ष से हूँ लेकिन कुल पाँच या छः बार गया हूँ।

उस समय को तो मैं हिन्दी नाटकों का आदियुग समझता हूँ। जैसा कि सरस्वती-सम्पादक ने हिन्दी लेखकों की तीन पीढ़ी कह कर आजकल को तीसरी पीढ़ी बतलाया है, बहुत ठीक कहा है। यह विभाजन मैं नाटकों में भी उचित समझता हूँ।

उस पीढ़ी में नाटककार उँगलियों पर गिनने योग्य थे—**भारतेन्दुजी** मुख्य थे ही। **सर्व श्री प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी, राधाचरण गोस्वामी, पं० देवकीनन्दन त्रिपाठी** (प्रयाग समाचार सम्पादक) इन्हीं के लिखे नाटक मैंने पढ़े और देखे। वस्तुतः स्टेज के लायक इन्हीं के नाटक थे भी।

अभिनय मैंने भारतेन्दु की मंडली का बलिया में देखा था—*सत्य हरिश्चन्द्र, भारत जननी, अंधेर नगरी, देवाक्षर चरित्र*। इन्हीं का खेल बलिया में हुआ था। वह भारतेन्दु की जिन्दगी का अन्तिम वर्ष था। अन्तिम वर्ष नहीं अन्तिम महीना ही समझ लीजिये। सन् 1884 ई० के जाड़े की सर्दी की शुरू थी। इन्हीं दिनों उनकी मण्डली ने अभिनय किया था। साथ में बाबू राधाकृष्णदास (उनके फुफेरे भाई) भी थे। और सज्जन भी थे। मेरी उम्र 18 वर्ष की थी। लेकिन हिन्दी-साहित्य में प्रवेश-काल ही था। बहुत कम समझ थी, अनुभव का भी श्री गणेश था। वहाँ से अभिनय देखकर हम लोग घर गये। भारतेन्दुजी भी काशी लौटे। महीना बीता, दूसरा नहीं पूरा हुआ होगा कि उनके मरने का स्यापा अखबारों में आ गया। मंगलवार छठी जनवरी सन् 1885 ई० को उन्होंने स्वर्ग पयान कर लिया।

उन दिनों हिन्दी नाटकों का स्टेज तो देहात और नगरों में खेलवाड़ ही था। बड़े शहरों में भी *इन्दर सभा, गुलबकावली* आदि के खेल हुआ करते थे। हम लोग जब कभी जाते तब यही सुनते कि *इन्दर सभा* देखने चलते हैं।

हाँ! कलकत्ते में बङ्गभाषा के नाटकों का स्टेज उन्नत था। स्टारमिनरका और क्लासिक बड़े जोरों पर था। **गिरिशचन्द्र घोष, क्षेत्रमोहन, विद्याविनोद** और **अमृतलाल** आदि नाटककारों में प्रधान थे। हिन्दी नाटक उन दिनों वही *इन्दर सभा, चतराबकावली* और *भूल-भुलैया* पारसी नाटक मंडलियों में खेले जाते थे।

बम्बई में पारसी नाटक मंडलियों द्वारा ही *इन्दर सभा, चों चों का मुरब्बा, भूल-भुलैया, कमरलजमाँ* के नाटक खेले जाते थे। गुजराती लड़के अभिनय करते थे। विक्टोरिया नाटक मंडली, पारसी थियेटर, अलफ्रेड नाटक मंडली—यही खेलने वाले थे। गुजराती नाटक मंडली में कभी-कभी हिन्दी नाटक खेले जाते थे।

उन दिनों कलकत्ता बम्बई को छोड़कर और जगह पटना, बनारस, आगरा में स्टेज या पर्दों का उतना ठाठ नहीं था। मथुरा की रास मंडलियाँ इधर आकर अपनी लीलाओं का दर्शन देहात में करातीं ''जमुना जी के तीर पर दरशन दिया करो'' यही अलापा जाता था। उनमें कौन अभिनेता किस विशेषता का था यह सब सवाल ही नहीं उठता।

हिन्दी नाटकों के दूसरे युग में आने पर इन बातों के खोज का अवसर मिलता है। हिन्दी नाटककारों में श्री पं० राधेश्याम, आगाहश्र काश्मीरी और नारायणप्रसादजी बेताब ने कहर मचा दिया। अच्छे-अच्छे नाटकों का स्टेज हुआ, न्यू अल्फ्रेड, कोरेन्थियन थियेटर आदि ने बङ्गभाषा के रङ्ग-मंचों का मुहासरा लेना शुरू किया। यह लोग बहुत ऊँचे गये। हिन्दी का नाट्य समाज भी खूब परिमार्जित हुआ। दस वर्ष और टॉकी के आने में देर होती तो हिन्दी-नाटक आसमान में उड़ने लगते। लेकिन इस तीसरी पीढ़ी में तो टॉकी वालों ने चित्रा, रूपवाणी में उतरकर सब पर पानी फेर दिया। आज वह दिन है कि कलकत्ते के स्टार, मिनर्वा, आदि सबका कायापलट हो गया। अब सबके सब टॉकी हाउस हो गये, और 'चित्रा' ने सबको चित्रवत् खड़ा कर रखा है। बायस्कोप के मूक प्रदर्शन तक नाटकों का जो रुतबा साहित्य के नभ-मंडल में एरोप्लेन का-सा प्लान बाँध रहा था वह सब मानो टॉकी की टिटकार पर जापान ने जहरीले गैस से सबका सफाया कर डाला। अब अभिनय करने वाली कम्पनियों का तो कोई नाम भी साहित्य-प्रेमी नहीं लेता। हाँ! देहातों में धनुष यज्ञ आदि के खण्ड-काव्य पं० राधेश्याम की तर्ज पर नाटकों के रूप में खेले जाते हैं। इनमें मथुरा की रास मंडलियों का परिश्रम अलबत्ते अब सराहने योग्य है।

मैं इन टॉकियों में नहीं जाता केवल आँखों की तकलीफ बचाने के लिये नहीं। बल्कि इसलिये कि अब इनमें भारतीय जीवन की नवका अच्छे स्रोत में बहाने का तो कुछ काम होता नहीं, और न इस तरह के उपादान से उनका उद्गम ही होता है। वहाँ तो सीता, सति सावित्री आदि का अभिनय होने पर भी विलिमोरिया, माधुरी, कंचन, मेहरुन्निसा के ला-जवाब हाव-भाव और आकर्षक अभिनय की

शेष पृष्ठ 2 पर

आलमगीर! तुम कहाँ हो ?

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

आलमगीर! शहंशाह औरंगजेब! तुम कहाँ हो? आज हिन्दुस्तान को तुम्हारी बेहद जरूरत है। कला के नाम पर बालीवुड का राहु राष्ट्र को ग्रसता जा रहा है। अब तो '**ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या**' के स्थान पर एक नयी सच्चाई पर विश्वास जमता जा रहा है—'**सिने सत्यं जगन्मिथ्या।**' कभी सारे रास्ते दुनियाँ के मात्र रोम की ओर जाते थे। आज सम्पूर्ण भारत की पगडंडियाँ मुम्बई की ओर जा रही हैं। हर सुन्दरी कन्या का, हर सुदर्शन युवक का उद्देश्य है सिने-जगत् में प्रवेश करना। इंजीनियर, डॉक्टर, प्राध्यापक, व्यवसायी अथवा आदर्श गृहिणी बनने के बजाय उन्हें कूल्हे मटकाने, नग्न प्रदर्शन करने तथा 'प्लॉट की सिचुएशन' के नाम पर कुछ भी अभद्र, अशिव, अमंगल एवं अनर्थ कर डालने में कोई संकोच नहीं है।

जब पिछली शती के सातवें दशक में चुलबुल रेखा ने चुम्बन देने की हामी भर दी थी तब समूचे भारत में भूकम्प-सा आ गया था। बड़े-बूढ़ों की मानो पगड़ियाँ उछल गई थीं। मानो भारतीय संस्कृति के कलेजे में दरार पड़ गई थी। परन्तु आज जो कुछ हो रहा है अभिनय और कला के नाम पर, उसके सामने तो 'चुम्बन' का कोई अस्तित्व ही नहीं। रेखा ने जिस चुम्बन की वकालत की थी उसमें केवल नायक-नायिका के मुख परस्पर मिलते थे। परन्तु चुम्बन का वह नन्हा पाषाणखण्ड अब 'पहाड़' बन गया है। अब तो नायक चूमना शुरू करता है नग्न नायिका की पिण्डलियों से, और नायिका की नग्न काया के दसों तीर्थों को चूमता उसके मुँह तक आ पाता है। सर्वाङ्गचुम्बन की यह विधि हमारे बालीवुड के संस्कृतिरक्षक कलाकारों ने ही विकसित की है जो पश्चिमी देशों में, अभी भी नहीं है। हमने इंग्लैण्ड, अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है।

शहंशाह आलमगीर! तुम्हारी दो-एक भयावह खामियों ने ही तुम्हें इतिहास और सहृदय-समाज में टिकने नहीं दिया। अन्यथा तुम अद्भुत अनुशासक और प्रशासक थे। यदि तुम अपने खरीदे हुए मुल्ला-मौलवियों से, काफिर होने का फतवा पढ़वा कर, दाराशिकोह का कत्ल न करवाते, फकीराना प्रवृत्ति वाले भाई मुराद को अफीम खिला-खिला कर ग्वालियर के किले में मार न डालते, यशस्वी बाप को कैद में न रखते और अपने इन्हीं ओछे व्यवहारों के कारण सारी जिन्दगी, स्वयं भी कुटुम्ब सुख से वञ्चित न रहते तो गज़ब की होती तुम्हारी ऐतिहासिक पहचान! परन्तु तुम्हें तो सनक सवार थी मन्दिर तोड़ने की। मन्दिरों को तोड़ते ही तोड़ते तुम स्वयं औरंगाबाद में टूट कर बिखर गये। तुम्हारे जैसी उपेक्षित मौत कोई शहंशाह नहीं मरा।

परन्तु तुम्हारी एक आदत मुझे अच्छी लगी—नचनियों, बजनियों और गवैयों-भाड़ों पर नकेल लगाना। ऐसा नहीं था कि तुम कला विरोधी थे। परन्तु तुम कला, संगीत, स्थापत्य की अमर्यादित आसक्ति के विरोधी थे। क्योंकि नृत्य-संगीत-अभिनय-महत्त्वाकांक्षा, श्रम, अध्यवसाय, पौरुष, उद्यम तथा क्रियाशीलता के घातक हैं एक सीमा तक। ये व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र को निष्क्रिय, शिथिल तथा आलसी बनाते हैं। नादिरशाह के आक्रमण की विभीषिका में भी मूर्ख मुहम्मदशाह रँगीला विलास में डूबा रहा। यह बहुत बड़ा प्रमाण है इसका। मस्ती और थकावट दूर करने के लिये मदिरा का एक-दो घूँट पीना और बात है। परन्तु हर समय ठर्रा चढ़ा कर किसी बजबजाती नाली में पड़ा रहना और बात है। परन्तु दुर्व्यसनी को विवेक कहाँ होता है? हमारे युवा स्वप्नों के आदर्शभूत 'हीरो' लोगों को क्या विवेक है कि उन्हें सरे-आम मञ्च पर, किसी अभिनेत्री से पैण्ट की जिप खुलवानी चाहिये या नहीं? अभिनेत्रियों को भी क्या विवेक है कि उन्हें किस सीमा तक नग्न होना चाहिये? नग्न होने की एक होड़-सी मची है इन भले घर की कन्याओं में! क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि उनकी नग्नता सारा राष्ट्र देख रहा है?

आलमगीर! काश तुम इस समय होते हिन्दुस्तान में तो क्या करते? यह सोच कर ही रोमाञ्च हो उठता है। सुना है कि तुम्हारी प्राणप्रिय बेटी जेबुन्निसा, जो अच्छी शायरा भी थी, किसी राजपूत युवक से प्रेम करती थी। हरम की तातार महिलाओं से तुम्हें उसके आने का पता चल गया। जेबुन्निसा ने अपनी मोहब्बत का वास्ता देकर उसे विशाल पानी के देग में छिपा दिया। और तुमने? तुमने पानी से आधा भरे उस देग को ही उबलवा दिया। प्रणयी राजपूत युवक चुपचाप उबल गया, परन्तु अपनी उपस्थिति छिपा कर उसने प्रणयिनी जेबुन्निसा की मोहब्बत को कलंकित नहीं होने दिया। इतने सख्त थे तुम अवैध प्रेम के!

कहाँ वह प्रणय-रक्षक राजपूत और कहाँ ये, आज के छिछोरे, कांछ के परम कच्चे भाँड़? अभिनय-प्रतिभा के नाम पर आकाश से भी बड़े शून्य! ये नाचते हैं 'स्नेक एण्ड लैडर' स्टाइल में इनका सारा कठिन अभिनय कोई अन्य खरीदा हुआ व्यक्ति करता है जिसे '**डुप्लीकेट**' कहा जाता है। परन्तु उस अभिनय की शोहरत ये निर्गुण 'मिट्टी के माधो' भुनाते हैं। गाता है **प्लेबैक सिंगर** और गीत की धुनों पर बेहयाई के साथ हाथ-पाँव फेंकते हैं ये दशकण्ठ लोग! ये नाचना शुरू करते हैं तो लगता है इन्हें मिरगी (हिस्टीरिया) का दौरा पड़ गया है। कभी लगता है जैसे बाबा हरसू ब्रह्म के दरबार में कोई प्रेत का रोगी 'अभुवा' रहा है।

कभी-कभी सोचता हूँ कि क्या चीन, जापान, कोरिया और इंग्लैण्ड-अमेरिका आदि में भी दूरदर्शन के पर्दे पर यही सब परोसा जा रहा है? शायद नहीं। ये राष्ट्र अपनी सैन्यशक्ति बढ़ाने में लगे हैं। अपने समाज की खामियों को दूर करने में लगे हैं। ब्रिटेन में अभी हाल ही में महिलाओं के लिये, घुटने से नीचे तक का स्कर्ट पहनना अनिवार्य कर दिया है। परन्तु प्रियंका और दीपिका जैसी दिगम्बर कन्याओं की यशस्वी माताओं! तुम्हें प्रणाम है असूर्यम्पश्या राजमहिषियों वाले इस राष्ट्र का! क्योंकि नई पीढ़ी की कन्याएँ बहुत-कुछ सीख रही हैं इनसे!

सम्पूर्ण राष्ट्र में, घर-घर में कैंसर व्याप्त है। और यह कैंसर है टी०वी० चैनलों का। कहाँ तक बचियेगा? और कैसे बचियेगा? हर सीरियल व्यभिचार, दुराचार, षड्यंत्र, दारुण यंत्रणा, छलछद्म, प्रवञ्चना, शोषण और पापाचार की शिक्षा दे रहा है। कहानी ही शुरू होती है आततायी सास-ससुर से अथवा देवरानी के प्रति संशप्तक युद्ध छेड़ने वाली जेठानियों से! आखिर यह सब क्यों दिखाया जा रहा है राष्ट्र को? मैं समूचे राष्ट्र की ओर से इन चैनलों से यह पूछना चाहता हूँ कि राहुल महाजन जैसे अकर्मण्य की 'सत्यकथा' आप राष्ट्र को क्यों दिखा रहे हैं? सारे धर्माचार्यों, समाज-सुधारकों, साहित्यकारों तथा राजनेताओं की छाती पर मूँग दलते हुए जब उसने दसों तथाकथित कामिनियों के साथ स्वयंवर रचाया तो क्या किसी ने पूछा कि यह सब क्या हो रहा है? क्या हर एक भारतीय युवक को शादी से पूर्व इस प्रकार का अमर्यादित, घटिया सेक्स-रिहर्सल करने का अधिकार है? यदि नहीं तो एक बेलगाम मनचले को ही इतनी खुली छूट क्यों? यह नंगापन सारा राष्ट्र देख और सह रहा है?

हमारे राष्ट्र के कर्णधार समानता के सिद्धान्त की बात करते हैं। समानता के विचार की, व्यवहार की, और भी हर प्रकार की। तो क्या समाज का प्रत्येक युवा विवाह के बहाने रँगरेलियाँ मनाये? स्वयंवर आयोजित करे राखी सावन्त और राहुल महाजन की तरह? शासन इसकी छूट देगा देश के समस्त युवकों को? यदि नहीं तो अभिनय, कला और मञ्च के नाम पर कुछ छिछोरों को ही इतनी छूट क्यों? क्या लाज, संकोच, नैतिकता और मर्यादा बालीवुड के लिये नहीं है? किसी युवती से मिलते ही उसे छाती से लगा लेना, चूम लेना—यह किस आचरणसंहिता में निर्दिष्ट है? यदि यही व्यवहार न्यायालय, विश्वविद्यालय, संसद और जन-जीवन में चलने लगे तो क्या होगा? क्या बालीवुड के पुरुष महायोगी शुकदेव हैं या फिर अनंगदाही देवाधिदेव शिव! पुरानी पीढ़ी के अभिनेता तो ऐसे नहीं थे!

शेष पृ० 10 पर

हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

[दसवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक]

डॉ० कुसुम राय

''वैसे तो हिन्दी साहित्य के इतिहास की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया यह पहला इतिहास-ग्रन्थ है। इससे छात्रों और शोधार्थियों का रास्ता काफी सुगम हो जाता है क्योंकि लिखित और मौखिक परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही पूछे जाते हैं।''

आकार डिमाई *पृष्ठ* 592

सजिल्द : 978-81-7124-623-6 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-7124-624-3 • रु० 250.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

रीतिकाल

रीति शब्द को परिभाषित कीजिए।

वामन के अनुसार गुण विशिष्ट रचना अर्थात् पद-संघटना पद्धति विशेष का नाम रीति है। रीङ् धातु में क्तिच् प्रत्यय लगाकर रीति का व्युत्पत्तिगत अर्थ मार्ग है। संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' शब्द काव्यरचना के मार्ग अथवा पद्धति विशेष के अर्थ में व्यवहृत हुआ है। हिन्दी के मध्ययुगीन कवियों ने भी काव्य- रचना-पद्धति के लिए 'रीति' शब्द का प्रयोग किया है।

विभिन्न कवियों द्वारा 'रीति' शब्द का प्रयोग किस प्रकार किया है, उदाहरण दीजिए।

(1) केशव—समुझैने वाला बालक हूँ वर्णन पंथ अगाध। (*कविप्रिया*)

(2) चिन्तामणि—रीति सुभाषा कवित्त की बरनत बुध अनुसार (*कवि कल्पतरु*)

(3) मतिराम—सो विश्रब्ध नवौढ़ यों बरनत कवि रसरीति (*रसराज*)

(4) भूषण—सुकविन हूँ की कछु कृपा, समुझि कविन को पंथ। (*शिवराजभूषण*)

(5) पद्माकर—ताही को रति कहत है, रसग्रंथन की रीति।

(6) देव— क. अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि रीति।

ख. भाषा प्राकृत संस्कृत देखि महाकवि पंथ।

(7) दूलह—थोरे क्रम क्रम ते कही अलंकार की रीति।

(8) भिखारीदास—काव्य की रीति सिख्यौ सुकवीन्ह सों।

(9) सोमनाथ—छंद रीति समुझै नहीं बिन पिंगल के ज्ञान।

इस संदर्भ में मिश्रबंधुओं का क्या विचार है?

मिश्रबंधुओं ने आचार्य के कर्त्तव्य कर्म को दिखाते हुए इस शब्द (रीति) का प्रयोग किया है—

''आचार्य लोग तो कविता करने की रीति सिखलाते हैं मानो वह संसार से यह कहते हैं कि अमुकामुक विषयों के वर्णनों में अमुक प्रकार के कथन उपयोगी हैं और अमुक प्रकार के अनुपयोगी।'' (*मिश्रबंधु विनोद*, भाग-2)

हिन्दी में रीतिकाव्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत रीतिकाव्य से तात्पर्य, रीतियुग में लिखा गया। समस्त काव्य नहीं, वरन् एक विशेष उद्देश्य और प्रवृत्ति के वशीभूत लिखा गया काव्य है। वह काव्य जिसकी रचना विशिष्ट पद्धति अथवा नियमों को दृष्टि में रखकर की गयी है। इसमें काव्य के सिद्धान्तों—अलंकार, रस, ध्वनि, नायिकाभेद, नखशिख, गुण आदि को ध्यान में रखकर लिखा गया काव्य लिया जाता है। इस प्रकार का काव्य रीतियुग में हम दो रूपों में देख सकते हैं—प्रथम तो लक्षण को देकर उसे स्पष्ट करनेवाले उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत काव्य और दूसरे बिना लक्षण दिए केवल उनका ध्यान रखकर लिखा गया काव्य।

हिन्दी रीतिशास्त्र का तात्पर्य समझाइए।

हिन्दी रीतिशास्त्र का तात्पर्य संस्कृत काव्यशास्त्र के रीतिसिद्धान्त से नहीं है। रीति को काव्य की आत्मा के रूप में मानकर काव्य का विश्लेषण करना हिन्दी रीति शास्त्र का उद्देश्य नहीं, वरन् इसका अर्थ संस्कृत अलंकारशास्त्र के समान व्यापक है। संस्कृत में रीतिशास्त्र के अन्तर्गत केवल वे ही ग्रंथ आ सकते हैं, जो रीति सिद्धान्त की चर्चा करते हैं, विशिष्टा पदरचना रीतिः, अर्थात् विशेष प्रकार की चमत्कारयुक्त रचना रीति है—जिनमें रीति को काव्य की आत्मा मानकर काव्य के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है, पर हिन्दी में शुक्ल आदि विद्वानों ने रीति को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है। उन्होंने रीति या मार्ग को संस्कृत की उपलब्ध धारणा से भिन्न काव्य-रीति या काव्य-लक्षण के रूप में ग्रहण कर उस काल को रीति काल कहा है, जिसमें इस प्रकार के काव्य लक्षण देने वाले ग्रंथों के लिखने की प्रमुख प्रवृत्ति देखने को मिलती है। ऐसी दशा में रीतिशास्त्र के अन्तर्गत केवल रीति सिद्धान्तों की चर्चा करने वाले ग्रंथ ही नहीं आते, वरन् उन समस्त ग्रंथों का समावेश हो जाता है जिनमें काव्य के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया हो, चाहे वे अलंकार के ग्रंथ हों, चाहे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति अथवा रीति के ग्रंथ हों। अतएव रीतिशास्त्र का तात्पर्य उन लक्षण देनेवाले या सिद्धान्त-चर्चा करने वाले ग्रंथों से है जिनमें अलंकार, रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि के स्वरूप, भेद-प्रभेद, तत्त्व और अंगों आदि पर विचार प्रकट किया गया है।

भारत में काव्यशास्त्र (रीतिशास्त्र) की उत्पत्ति कब से मानी जाती है?

प्राचीन ग्रंथ वेद, वेदांग, संहिता, ब्राह्मण तथा उपनिषद् आदि साहित्य शास्त्र के विषय में मौन हैं, यद्यपि कि वैदिक ऋचाओं के रचयिता वाणी के रस से परिचित थे। उनमें नृत्य, गीत, छंदरचना के सिद्धान्तों का विवेचन व 'उपमा' शब्द का प्रयोग भी मिलता है। भारत के व्याकरण के आदिग्रंथ 'निरुक्त' और 'निघंटु' में काव्यशास्त्र की चर्चा नहीं है, उपमा का विवेचन यास्क ने जरूर किया है। पाणिनि के समय उपमा का स्वरूप निर्धारित हो चुका था, पतंजलि के 'महाभाष्य' में इन रूपों की सम्यक् व्याख्या मिलती है, व्याकरणशास्त्र वैसे काव्यशास्त्र का मूलाधार है। वाणी के अलंकरण के सिद्धान्त पर व्याकरण के सिद्धान्तों का प्रभाव है, ध्वनि का प्रसिद्ध सिद्धान्त व्याकरण के 'स्फोट सिद्धान्त' से गृहीत है। व्याकरण के बाद काव्यशास्त्र का दूसरा आधार दर्शन है। शब्दशक्तियों का संकेत न्यायशास्त्र के शब्द विवेचन में मिलता है। व्याख्यात्मक आलोचना न्याय और मीमांसा से उद्भूत हुई है, पर इनसे काव्यशास्त्र की उत्पत्ति के विषय में कोई निश्चित सिद्धान्त स्थिर नहीं हो पाता। दर्शन और व्याकरण के बहुत बाद काव्यशास्त्र का आरम्भ हुआ। डॉ० सुशीलकुमार दे, काणे आदि ईसा की पहली पाँच शताब्दियों से उसका जन्म मानते हैं। 'भरत' के 'नाट्यशास्त्र' का मूल रूप इसी काल की आरम्भिक रचना है। इतिहासकार उसका रचनाकाल ईसा की पहली शताब्दी के आसपास बताते हैं। भरत ने कृशाश्व और शिलालिन् के नामों का, भामह ने मेघाबिन् और दण्डी ने कश्यप आदि का उल्लेख किया है पर इनके ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। भरत के बाद काव्यशास्त्र समृद्ध होता गया। उसमें कई वादों व संप्रदायों की प्रतिष्ठा हुई—रस-संप्रदाय, अलंकार-सम्प्रदाय, रीति-सम्प्रदाय, वक्रोक्ति-सम्प्रदाय, ध्वनि-सम्प्रदाय।

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

तुंगभद्रा से गंगातट : हरिहर से विश्वनाथ

के० चन्द्रमौलि

'' चन्द्रमौलिजी कन्नड़ में उन इने-गिने रचनाकारों में हैं जिन्होंने यात्रा-विवरण लिखा है। मुम्बई, वाराणसी और बेंगलुर नगरों पर इनके सांस्कृतिक अध्ययन ने अत्यधिक लोकप्रियता ग्रहण की है और विद्वानों से प्रशंसित हुए हैं। यात्रा-विवरण पुस्तकों की शृंखला की यह एक अद्वितीय पुस्तक है।

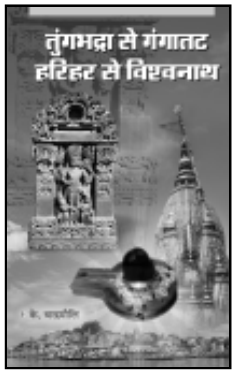

आकार डिमाई *पृष्ठ* 168

अजिल्द : 81-7124-433-5 • रु० 180.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

तुंगभद्रा के उस पार

अपने गाँव की बस से निकला था। गाँव छोड़कर किसी पड़ोसी गाँव में जाता तो चिन्ता की कोई बात नहीं थी। मगर अब मैं पड़ोसी गाँव से ट्रेन पकड़कर पुणे (महाराष्ट्र का पूना) तक गाड़ी में एक रात बिताकर, फिर आगे पुणे से मुम्बई और वहाँ से आगे काशी तक दो रातें बितानेवाला था। बस में मेरे बगल में बैठे निंगण्ण को बड़ा अचरज हुआ—''क्यों जी, हमारे बेंगलूर-मैसूर में कॉलेज नहीं हैं क्या?'' मन ही मन कह दिया—यह प्रश्न मुझसे नहीं, मेरे पिता से पूछो। पिताजी की आज्ञा कि बनारस में जाकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई करो—का विरोध कैसे करता? इंजीनियर बनना तब श्रेष्ठता और बड़प्पन का प्रतीक था।

बगल में बैठे निंगण्ण को कैसे समझाता कि मैसूर-बेंगलूर में कॉलेज तो हैं, मगर काशी का विश्वविद्यालय बहुत बड़ा है। उसके संस्थापक पं० मदनमोहन मालवीयजी बड़े हैं, अथवा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बड़े हैं, अथवा वहाँ के छात्रों की संख्या बड़ी है, अथवा वहाँ शिक्षा-प्राप्त छात्र बड़े पदों पर हैं? मेरी समझ में नहीं आ रहा था। मेरा जवाब सुनकर बेचारा गाँव का निवासी निंगण्ण चुप हुआ। मगर मेरे मन की दौड़ नहीं रुकी, वह और तेज गति पाने लगी। विश्वविद्यालय में आवेदन करने पर मेरी 'मेरिट' देखकर सीट दे देना कहाँ तक ठीक है? जातिभेद, वर्णभेद, स्थितिभेद आदि का विचार क्यों नहीं किया गया? केवल बुद्धिभेद पर ही क्यों विचार किया गया? मेरा मन पशोपेश में पड़ गया। अनेक प्रकार के भेदों के बीच पड़े हुए मेरे मन में यह सुनकर अचरज हुआ कि बुद्धिभेद नाम की प्रमुख स्थिति भी दुनिया में है।

मेरे दु:ख का बाँध टूट गया था। माता-पिता, भाई-बहन, यार-दोस्त, घर का स्वादिष्ट भोजन, गाँव की पहाड़ी, प्रकृति का दामन, सब कुछ छोड़कर दूर जाने की पीड़ा चुभ रही थी। रेल की छुक-छुक की आवाज के साथ मेरी छाती भी धक-धक कर रही थी। इस पशोपेश में झपकी लगी। झपकी तब खुली जब किसी स्टेशन पर ट्रेन के रुकने अथवा लोगों के हंगामे का एहसास हुआ। खिड़की से बाहर झाँका तो दो-चार हिंजड़े बेतरतीब भाग रहे थे। स्टेशन का नाम देखा तो पाया 'हरिहर'। हरि और हर दोनों एक-दूसरे के विरोधार्थी नाम थे।

हरिहर की तुंगभद्रा नदी कर्नाटक राज्य को स्थूल रूप से दक्षिण और उत्तर में विभाजित करती है। भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बाकी बातों में भी इन दोनों क्षेत्रों में काफी भिन्नता पाई जाती है। तुंगभद्रा के एक तरफ कॉफी तो दूसरी तरफ चाय; एक तरफ भात-सारु (सांबार), तो दूसरी तरफ भाकरी-भाजी। इस तरफ बीड़ा (पान), उस तरफ तमाखू। एक बाजू में अड्ड-पंचे (लुंगी), दूसरे बाजू में कच्चे पंचे (धोती)। एक तरफ सिर पर पेटा तो दूसरी तरफ रूमाल-तौलिया। शायद हरिहर की मिट्टी का गुण कि तब तक आँखों से आँसू बहानेवाले मेरे मन में हिम्मत आ गई थी। आँसू पोंछकर तनकर बैठ गया। हरिहर आने तक ट्रेन के अन्दर के प्रवासी एक-दूसरे से अपरिचित जैसी भावना से और दूसरे से कैसे बोलूँ के अंग्रेज संकोच के मारे चुप्पी साधे बैठे थे। किसी कोने से टूटी-फूटी अंग्रेजी के शब्द सुनाई दे रहे थे। मैं अपने घर के सोच-विचार में पड़ा था। पूरा डिब्बा खामोश था। इसकी खामोशी हरिहर और दावणगेरे स्टेशन की रेलमपेल ने तोड़ दी। वहाँ के यात्री 'जागे इल्ल' (जगह नहीं) बताने पर भी एक-दूसरे पर चढ़कर, लाँघकर सामानों का बोझ हर कहीं ठूँसकर, यात्रियों के पैरों पर डालकर जोर-जोर से चिल्लाए जा रहे थे। तप करते हुए बैठे संन्यासी के आश्रम में घोड़ों की टाप, धूल, भगदड़, शिकारी कुत्तों के भौंकने के साथ-साथ चिल्लानेवाले शिकारियों के झुण्ड के घुसने की तरह वातावरण बन गया था हम अन्दर के यात्रियों के लिए। नये आगन्तुकों का हंगामा बर्दाश्त न कर पाने के कारण अन्दर के कुछ लोगों ने शुद्ध कन्नड़ भाषा में कहा—''अजी यह क्या है, यहाँ सरसों रखने तक जगह नहीं, समझे''। मेरे मन में यकीन हुआ कि ये लोग 'अंग्रेजों के राजा बेटे' तो नहीं, बल्कि हमारे 'बेंगलूर के गर्वीले बन्धु' हैं। मगर उन्हें कन्नड़ आती है—का मेरा आनन्द क्षणभंगुर था। जब मैंने उनसे कन्नड़ में बात की तो झट से उन्होंने अंग्रेजी बघारना शुरू किया। उनके मन में राज खुलने का दु:ख था। मेरे मन में कॉलेज की सीढ़ी चढ़ने का दंभ चढ़ गया और मैंने भी हवा में अंग्रेजी की तलवार चलाई। फिर लगा कि इनके साथ दिखावा करने की अपेक्षा हरिहर-दावणगेरे के मिट्टी के सपूतों, व्यापारी लोगों के साथ कपास, गेहूँ आदि के बारे में दो शब्द बोलना उचित है। मगर मुश्किल यह कि वे सब अपनी-अपनी बातों में व्यस्त थे, पड़ोसी की बात की परवाह नहीं थी। इस प्रकार एक तरफ दावणगेरे की खलबली से अनजान होकर, दूसरी तरफ बेंगलूर के घमण्ड से मुँह मोड़कर, असहाय होकर खिड़की से बाहर देखते हुए चुप रहना उचित समझा।

हुब्बल्ली (हुबली) स्टेशन आया, मगर कहीं भी 'हू' और 'बल्ली' (फूल और लता) के दर्शन नहीं हुए। ट्रेन के रुकते ही एक भारी-भरकम बदन का आदमी अपने परिवार के साथ सबको ठेलते हुए जबरन अन्दर घुसा। उस भीमकाय ने अपने सामान को ही डिब्बे के अन्दर नहीं फैलाया, बल्कि अपने चौड़े शरीर को भी फैला दिया, जिससे हम सब कोने-कोने में दबकर बैठने को मजबूर हुए।

कुछ पल बाद भीमकाय हुब्बल्ली वाले की नजर कोने में दबकर, दुबककर बैठे मुझ पर पड़ी। मेरी पहचान कर ली, अपनी पहचान बताई। काशी में जाने की मेरी बात सुनकर वे ठहाका मारते, नाटकीय ढंग से बोले—अरे बबलू, तुम क्यों काशी जा रहे हो? नहीं, अब मत जा, हमारे यहाँ एक बड़ी सुन्दर सलोनी लड़की है, शादी करके मजे से रहना, समझे? उसकी बात सुनकर अड़ोस-पड़ोसवाले अपनी हँसी रोक न सके। मेरा चेहरा देखने लायक था। मैं मूक पशु बन गया। कुल मिलाकर भीमकाय के आने के बाद पूरे डिब्बे में नई जान-सी आ गई। किसी नाटक में सुना हुआ एक गाना याद आया। उसकी कतरनें इस प्रकार हैं—

आया-आया हुब्बल्लीवाला...
जोर-जोर से भागा आया हुब्बल्लीवाला...
जाडी लुंगी पहना हुआ, काली कोट पहना हुआ...
सिर पर पेटा कसा हुआ, दाढ़ी मूँछें बढ़ाया हुआ...
आया, आया...
उजड्ड बातों वाला, वह हुब्बल्लीवाला...
फूलों सा दिलवाला... वह हू-बल्लीवाला
आया-आया...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

मलिक मुहम्मद जायसीकृत

पदुमावति

[मूलपाठ तथा साहित्यिक व्याख्या]

सम्पादक एवं व्याख्याकार : **डॉ० कन्हैया सिंह**

'' ...पाठानुसंधान का कार्य बहुत श्रमसाध्य है और यही कारण है कि इस कृति में विद्वान लेखक को शुद्धि-संशोधन के लिए एक-एक शब्द पर जूझते हुए देखते हैं। इस कृति से जायसी का मूलपाठ तो निखर कर आ ही रहा है, इससे प्राचीन तथा मध्यकालीन कुछ अन्य कृतियों के पाठानुसंधान के लिए भी प्रेरणा तथा पथ-संकेत मिलेंगे।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 560

सजिल्द : 978-81-7124-727-1 • रु० 500.00
अजिल्द : 978-81-7124-728-8 • रु० 275.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड

[२५]

सिंघल दीप कथा अब गावौं। औ सो पदुमिनि बरनि सुनावौं।
बरनक दरपन भाँति बिसेखा। जो जेहि रूप सो तैसइ देखा।
धनि सो दीप जहँ दीपक नारी। औ सो पदुमिनि दईं सँवारी।
सात दीप सब बरनै लोगू। एकौ दीप न ओहि सरि जोगू।
दिया दीप नहिं अस उजियारा। सरा दीप सरि होइ न पारा।
जंबू दीप कहौं तस नाहीं। लंक दीप पूजै नहिं छाहीं।
दीप कुम्हस्थल आरन परा। दीप महुस्थल मानुस हरा।
सब संसार परथमैं आए सातौ दीप। एकौ दीप न उत्तिम सिंघल दीप समीप॥ २५॥

व्याख्या—कवि कहता है कि अब मैं सिंघल द्वीप की कथा का गायन कर रहा हूँ और उस पद्मिनी का वर्णन करके सुना रहा हूँ(जिसका सन्दर्भ ऊपर आ चुका है)। उसकी रूपरेखा दर्पण के समान विशिष्ट है, उसमें जो जिस रूप का होता है उसे वैसा ही रूप दिखलायी देता है। वह द्वीप धन्य है जहाँ दीपक के समान सुन्दर नारियाँ हैं और जहाँ पद्मिनी जैसी नारी को स्वयं परमात्मा ने अपने हाथों से सँवार कर बनाया है। सब लोग सात द्वीपों का वर्णन करते हैं, उनमें से एक भी द्वीप उस सिंघल द्वीप की समता का नहीं है। दिया द्वीप सिंघल द्वीप जैसा प्रकाशित नहीं है। सरन् द्वीप भी उसके बराबर नहीं है। जम्बू द्वीप भी वैसा नहीं है। लंका द्वीप तो उसकी परछाँयी के बराबर नहीं है। कुम्हस्थल द्वीप तो अरण्य (जंगल) में पड़ा हुआ है और महुस्थल द्वीप में मनुष्य का निवास ही नहीं है।

सारे संसार में सर्वप्रथम ये सातों द्वीप ही आये जिनमें से एक भी सिंघल द्वीप के समान उत्तम नहीं है।

टिप्पणी—सात द्वीप—पुराणों में जम्बू, शाक, शाल्मल, कुश, कौञ्च, मेदक, पुष्कर सात द्वीप हैं।

जायसी ने अपने ढंग से इन नामों में काल्पनिक हेरफेर किया है। ए०जी० शिरेफ के अनुसार जायसी द्वारा उल्लिखित सात द्वीप पद्मिनी के सात अंगों का संकेत करते हैं, जैसे दिया द्वीप—नेत्र, सरन द्वीप—श्रवण, जम्बू द्वीप—जामुन जैसे काले केश, लंक द्वीप—कटि, कुम्हस्थल द्वीप—स्तन और महुस्थल द्वीप—नारी गुह्याँग, सिंघल द्वीप—ब्रह्मरंध्र।

कवि की व्यंजना है कि शारीरिक सौन्दर्य ब्रह्म प्राप्ति के सौन्दर्य के सम्मुख नगण्य है।

[२६]

ग्रंध्रपसेन सुगंध नरेसू। सो राजा वह ताकर देसू।
लंका सुनाँ जो राँवन राजू। तेहू चाहि बड़ ताकर साजू।
छप्पन कोटि कटक दर साजा। सबै छत्रपति ओरंगन्ह राजा।
सोरह सहस घोर घुरसारा। सावँकरन बालका तुखारा।
सात सहस हस्ती सिंघली। जिमि कबिलास एरापति बली।
असुपतीक सिरमौर कहावा। गजपतीक आँकुस गज नावा।
नरपतीक को और नरिंदू। भुअपतीक जग दोसर इंदू।
अइस चक्कवै राजा चहूँ खंड **भुव** होइ।
सबै आइ सिर नाँवहि सरबरि करै न कोइ॥ २६॥

व्याख्या—सिंघल द्वीप में गन्धर्वसेन नाम का एक कीर्तियुक्त राजा था। वही इस देश का राजा था और यह उसका देश था। लंका में जिस राजा रावण का नाम सुना जाता है उससे भी बड़ा गन्धर्वसेन का वैभव था। छप्पन कोटि सैन्य दल उसके पास था और सभी छत्रपति राजा उसके सिंहासनाधीन थे। सोलह सहस्र घोड़े और उनके घुड़साल उसके पास थे जिनमें श्यामकरण, बलखी और तुखारी घोड़े भी थे। सात हजार सिंघली हाथी उसके पास थे मानो वे कैलाश के (यहाँ स्वर्ग से अभिप्राय है) राजा इन्द्र के बलवान ऐरावत हाथी के समान थे। अश्वपतियों में वह शिरमौर और गजपतियों को गज के अंकुश से नमित करने वाला था। वह नरपति था उसके सम्मुख दूसरा और कौन नरेन्द्र था और वह ऐसा भूपति था जैसे संसार में दूसरा इन्द्र हो।

चक्रवर्ती राजा चतुर्दिक पृथ्वी पर जो थे सभी आकर उसके सामने सिर झुकाते थे और कोई बराबरी नहीं कर सकता था।

टिप्पणी—कैलाश—जायसी कबिलास (कैलाश) को स्वर्ग के अर्थ में भी प्रयुक्त करते हैं और वहाँ इन्द्र की स्थिति का वर्णन करते हैं। कैलाश शिव का निवास है, इन्द्र का नहीं। स्वर्ग और कैलाश अलग-अलग हैं। जायसी के प्रतीक में कैलाश या स्वर्ग ब्रह्म-रंध्र के द्योतक हैं। अत: उनके अभेद में कवि को आपत्ति प्रतीत नहीं होती है।

[२७]

जौहि दीप नियरावा जाई। जनु कबिलास नियर भा आई।
चहूँ पास अँबिरित अँबराई। परै दृष्टि अति सघन सुहाई।
तरिवर सबै मलै गिरि लाए। भुइँ हुत उठे सरग लहि छाए।
ओही छाँह रैनि होइ आवै। हरियर सबै अकास दिखावै।
मलै समीर सोहाई छाहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहि माँहा।
पंथिक जौं पहुँचहि सहि घामू। दुख बिसरै सुख हुत बिसरामू।
जिन्ह वह पाई छाँह अनूपा। बहुरि न आव सहै यह धूपा।
अस अँबराउँ सघन घन बरनि न पारौ अंत।
फूलै फरै छऊ रितु जानहु सदा बसंत॥ २७॥

व्याख्या—जैसे ही द्वीप निकट आता है ऐसा प्रतीत होता है मानो कैलाश निकट आ गया हो। इस द्वीप के चारों ओर अमृत फल वाली बगीचियाँ हैं।...

प्राप्ति स्थान
विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को राष्ट्रपति-सम्मान

संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को स्वतन्त्रता दिवस (15 अगस्त 2010) के अवसर पर भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति सम्मान प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारत सरकार द्वारा स्वतन्त्रता दिवस पर संस्कृत के विद्वानों को पुरस्कृत किया जाता है। इस वर्ष डॉ० कपिलदेव द्विवेदी सहित 15 संस्कृत विद्वानों को यह सम्मान दिया गया है।

प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को इसके पूर्व 1991 में पद्मश्री सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है। संस्कृत जगत् में अपने 70 से अधिक ग्रन्थों के माध्यम से भारत ही नहीं अपितु विश्व में डॉ० द्विवेदी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। डॉ० द्विवेदी की गणना संस्कृत भाषा के सरलीकरण करने वाले विद्वानों में प्रमुखता से की जाती है। आपकी रचना **रचनानुवादकौमुदी** (प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी) के माध्यम से लाखों व्यक्तियों ने संस्कृत सीखी है। आपने वेदामृतम् के 40 भागों के माध्यम से वेदों का ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाया है। आपके 10 से अधिक ग्रन्थ पुरस्कृत हुए हैं। आपको उ०प्र० संस्कृत व हिन्दी संस्थान व विभिन्न संस्कृत अकादमियों द्वारा भी कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। विदेशों में आपको सूरिनाम के राष्ट्रपति द्वारा 1990 में, मारीशस के राष्ट्रपति द्वारा 1991 में, फ्रेंकफर्ट यूनिवर्सिटी द्वारा 1989 में तथा अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आपको 1992 में उ०प्र० संस्कृत संस्थान द्वारा संस्कृत साहित्य में विशिष्ट योगदान हेतु 25 हजार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया। वेदपण्डित पुरस्कार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा व अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन द्वारा 1995 में, 'वेद-वेदांग' पुरस्कार (20 हजार रुपये) आर्यसमाज सान्ताक्रूज मुम्बई द्वारा 2000 में, भारतीय विद्या भवन बंगलौर द्वारा 'गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न' पुरस्कार 2005 में एक लाख रुपये व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त अनेकानेक संस्थाओं ने विशिष्ट पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया है।

राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित अन्य लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान हैं—प्रो० वी० स्वामीनाथन, प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', डॉ० शंकर देव शर्मा अवत्रे, प्रो० विजय पाण्डेय देवशंकर, श्री० एच० वी० नागराज राव, पण्डित मोतीराम शास्त्री, डॉ० देवीप्रसाद खण्डेराव खार्वान्डिकर, श्री० भुवनेश्वर कार, पं० मदन मोहन शर्मा, श्री० जी०आर० रामचन्द्र शास्त्री, प्रो० सीतानाथ डे, डॉ० गणेश दत्त शर्मा, डॉ० जयदत्त उप्रेती, श्रीमती गौरी धर्मपाल। पालि/प्राकृत के डॉ० उदय चन्द्र जैन को भी राष्ट्रपति सम्मान प्रदान किया गया।

कमल कुमार सम्मानित

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी और संस्कृति परिषद, भोपाल द्वारा 'भारत भवन' में आयोजित 'अलंकरण समारोह' में वर्ष-2007 के 'अखिल भारतीय गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान' के लिए कमल कुमार के कहानी-संग्रह 'घर-बेघर' को पुरस्कृत किया गया। मध्य प्रदेश के साहित्य एवं संस्कृति मन्त्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने पच्चीस हजार रुपए की पुरस्कार राशि और शाल भेंट करके कमल कुमार को अलंकृत किया।

साहित्य अकादमी फेलो बने खुशवंत व केदारनाथ

नई दिल्ली। प्रख्यात स्तम्भकार व लेखक खुशवंत सिंह, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार केदारनाथ सिंह और मैथिली के जानेमाने लेखक चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' को साहित्य अकादमी ने फेलो सम्मान से सम्मानित करने की घोषणा की है। इससे पूर्व यह सम्मान नागार्जुन, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती जैसे लेखकों को दिया जा चुका है।

बाल साहित्य पुरस्कार

साहित्य अकादमी ने भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य को बढ़ावा देने के लिए इस वर्ष 20 लेखकों को बाल साहित्य पुरस्कार देने की भी घोषणा की है। अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं के दस लेखकों को वर्ष 2009 के भाषा सम्मान के लिए चुना गया है।

साहित्य अकादमी के सचिव श्री कृष्णमूर्ति द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार हिन्दी साहित्य का बाल साहित्य पुरस्कार लेखक **प्रकाश मनु** को दिया जा रहा है। इसके अलावा इसमें **गगन चंद्र अधिकारी** (बाल साहित्य में पूर्ण योगदान के लिए—असमी भाषा), **सरल डे** (बाल साहित्य में पूर्ण योगदान के लिए—बंगाली), **जसबीर भुल्लर** (पंजाबी उपन्यास), **दामयंती जडवाल चंचल** (राजस्थानी छोटी कहानियाँ), **गुलाम हैदर** (उर्दू छोटी कहानियाँ), **कलुवकोलनू सरदनंदा** (तेलुगु उपन्यास), **मा कमलावेलन** (तमिल उपन्यास), **किमन यू मुलानी** (सिंधी कविता), **बोय्हा बिस्वंथ तुडु** (संथाली), **पुन्यप्रभा देवी** (ओडिसा छोटी कहानियाँ), **नैना सिंह योनजान** (नेपाली बाल साहित्य में पूर्ण योगदान के लिए), **अनिल अवचत** (मराठी छोटी कहानियाँ), **सिप्पी पल्लीपुरम** (मलयालम छोटी कहानियाँ), **तारा नंद वियोगी** (मैथिली छोटी कहानियाँ), **प्रकाश परिएक्कर** (कोंकणी नाटक), **बालुवारू मोहम्मद कुन्ही** (कन्नड़), **मिनी श्रीनिवास** (अंग्रेजी उपन्यास), **ज्ञानेश्वर** (डोगरी), **नवीन मल्ला बारो** (बोडो) शामिल हैं।

गुजराती, कश्मीरी, मणिपुर तथा संस्कृत के लेखकों की घोषणा बाद में की जाएगी। इन्हें पुरस्कार स्वरूप 50 हजार रुपए की राशि, प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिह्न नवम्बर माह में प्रदान किए जाएँगे। भाषा सम्मान पाने वाले लेखकों में पंजाबी सूफी साहित्य विशेषज्ञ **डॉ० गुरुदेव सिंह** तथा दक्षिण भारत के क्लासिक एवं मध्यकालीन साहित्य के लिए **प्रो० कोरलापति राममूर्ति** को चुना गया है।

पुरस्कृत होने वाले अन्य लेखकों में **माधव जोशी अश्क** तथा **तेजपाल दर्शी तेज** (काछी भाषा में अभूतपूर्व योगदान के लिए संयुक्त पुरस्कार), **विश्वनाथ पाठक** (अवधी भाषा तथा साहित्य), **सुदामा प्रसाद प्रेमी** तथा **प्रेमलाल भट्ट** (गढ़वाली भाषा तथा साहित्य), **डॉ० राम नारायण शर्मा** तथा **डॉ० कैलाश बिहारी द्विवेदी** (बुंदेली भाषा तथा साहित्य), **निरंजन चकमा** (चकमा भाषा तथा साहित्य) हैं।

इन सभी लेखकों को *एक-एक लाख रुपए, प्रशस्ति पत्र* तथा *प्रतीक चिह्न* दिए जाएँगे।

'राष्ट्रीय माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार' समारोह

22 जुलाई को भारत भवन, भोपाल में आयोजित एक भव्य अलंकरण समारोह में विख्यात कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्गल की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के संस्कृति, उच्च शिक्षा, जनसम्पर्क एवं तकनीकी शिक्षा मन्त्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा द्वारा कवयित्री-कथाकार डॉ० बिनय षंडगी राजाराम को उनके निबन्ध-संग्रह 'तथैव च' पर 'माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार-2007' प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें शॉल-श्रीफल व सम्मान-पत्र के साथ 25 हजार रुपए की राशि भेंट की गई। इस समारोह में कुल 19 साहित्यकारों को विभिन्न साहित्यिक विधाओं पर प्रकाशित उनकी पुस्तकों पर सन् 2006 व सन् 2007 के लिए ये पुरस्कार प्रदान किए गए।

वर्ष 2009 केदार सम्मान घोषित

समकालीन कविता के चर्चित कवि श्री अष्टभुजा शुक्ल को उनके कविता-संग्रह 'दुःस्वप्न भी आते हैं' के लिए 2009 का 'केदार सम्मान' देने का निर्णय किया गया है।

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन सम्मान

25 जुलाई को चेन्नई में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान द्वारा प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा शिक्षा-संवर्धन के अग्रणी विद्वान् प्रो० रामजन्म शर्मा को पत्रकारिता, साहित्य लेखन तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणादायक प्रयासों के लिए 'डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन सम्मान' से विभूषित किया गया। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के तिहत्तरवें दीक्षांत समारोह में पुडुचेरी के

उपराज्यपाल महामहिम डॉ० इकबाल सिंह द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया।

भारतवंशी विद्वान् सम्मानित

15 जुलाई को रिसर्च फाउंडेशन दिल्ली द्वारा आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय परिचर्चा गोष्ठी में बर्लिन, जर्मनी के प्रवासी भारतीय डॉ० अवनीश लुगानी को समाज-सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान तथा मॉरिशस के भारतवंशी लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण को उनके हिन्दी-अंग्रेजी व फ्रेंच में अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

रामनाथ गोयनका अवार्ड

27 जुलाई को इंडिया टुडे के एसोशिएट एडिटर श्री श्यामलाल यादव को खोजी पत्रकारिता के लिए 'रामनाथ गोयनका अवार्ड' से सम्मानित किया गया। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने सम्मान-स्वरूप उन्हें एक लाख रुपए और प्रतीक-चिह्न प्रदान किया।

तमिलभाषी श्री कण्णन सम्मानित

विगत दिनों देश की जानी-मानी हिन्दी सेवी संस्था 'हिन्दी भवन' ने अपने प्रतिष्ठित एवं विशिष्ट 13वें हिन्दीरत्न सम्मान से तमिलनाडु में हिन्दी के प्रबल पक्षधर, अनुवादक और साहित्यकार श्री त०शि०क० कण्णन को एक भव्य समारोह में अलंकृत किया। समारोह के अध्यक्ष सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश श्री विकास श्रीधर सिरपुरकर, मुख्य अतिथि श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, श्री हरीशंकर बर्मन, डॉ० रत्ना कौशिक एवं हिन्दी भवन के मन्त्री डॉ० गोविंद व्यास ने श्री कण्णन को सम्मान-स्वरूप एक लाख रुपए की सम्मान राशि का चेक, प्रशस्ति-पत्र, वाग्देवी की प्रतिमा, रजत श्रीफल, शॉल और पुष्पहार प्रदान किए। इस अवसर पर गाँधीजी के अनन्य सहयोगी और हिन्दी तथा मराठी के स्वनामधन्य साहित्यकार काका साहेब कालेलकर की 125वीं जयंती के अवसर पर उनके तैलचित्र का अनावरण भी किया गया।

'प्रेम भाटिया सम्मान'

11 अगस्त को इण्डियन एक्सप्रेस की पत्रकार श्रीमती ऋतु सरीन को 'राजनीतिक रिपोर्टिंक व विश्लेषण' में उत्कृष्ट कार्य के लिए और श्री राजकुमार केसवानी को 'पर्यावरण पत्रकारिता' में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'प्रेम भाटिया सम्मान' से सम्मानित किया गया।

गणेश शंकर विद्यार्थी अवार्ड

सोनभद्र। पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, पत्रकारों को संगठित करने के साथ ही उनके हितों की रक्षा में लगे पूर्वांचल के दो वरिष्ठ पत्रकारों महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के प्रो० राममोहन पाठक व सोनभद्र के मिथिलेश द्विवेदी को गणेश शंकर विद्यार्थी अवार्ड से सम्मानित किया गया है। पत्रकारों को गुलाबी शहर जयपुर में 22 अगस्त को आयोजित भारतीय ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के 35वें राष्ट्रीय अधिवेशन में राजस्थान सरकार के कैबिनेट मन्त्री बाबू लाल नागर ने सम्मानित किया।

ममता कालिया को लमही सम्मान

प्रसिद्ध कहानीकार ममता कालिया को उनकी कहानी 'संस्कृति' के लिए पहला लमही सम्मान देने की घोषणा की गई है। उनकी यह कहानी वर्ष 2009 में लमही पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। त्रैमासिक पत्रिका लमही की ओर से मुंशी प्रेमचंद की पुण्यतिथि पर 8 अक्टूबर को उनके गाँव लमही में आयोजित समारोह में यह सम्मान प्रदान किया जाएगा।

मधुरेश व ज्योतिष जोशी सम्मानित

रायपुर (छत्तीसगढ़) में प्रेमचंद जयन्ती के अवसर पर यहाँ आयोजित समारोह में आलोचक, कवि, नाटककार और शिक्षाविद् प्रमोद वर्मा की स्मृति में स्थापित संस्थान द्वारा द्वितीय प्रमोद वर्मा स्मृति आलोचना सम्मान से आलोचक मधुरेश और ज्योतिष जोशी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अज्ञेय और शमशेर पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

मानवाधिकार पुरस्कार

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग द्वारा मानव अधिकारों पर हिन्दी में सृजनात्मक लेखन पुरस्कार योजना वर्ष 2008-09 के अन्तर्गत मानव अधिकारों सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर हिन्दी में सृजनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय नागरिकों द्वारा मूलत: हिन्दी में लिखी गई या हिन्दी में अनूदित पुस्तकें/पाण्डुलिपियाँ आमन्त्रित की गई हैं। मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई पुस्तकों/पाण्डुलिपियों के लिए प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार क्रमश: 50, 40 और 30 हजार रुपए का तथा हिन्दी में अनूदित पुस्तकों/पाण्डुलिपियों के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुस्कार क्रमश: 30, 25 और 20 हजार रुपए का है। पुस्तक या पाण्डुलिपि में शब्दों की संख्या कम से कम 30 हजार हो। प्रविष्टियाँ भेजने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर 2010 है।

सप्रे संग्रहालय ने किया पत्रकारों का सम्मान

भोपाल स्थित माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान द्वारा पत्रकारिता में उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय पुरस्कार समारोहपूर्वक प्रदान किए गए। सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता के लिए स्थानीय सम्पादक गिरिश उपाध्याय को माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति पुरस्कार तथा प्रख्यात पत्रकार व प्रथम प्रवक्ता के सम्पादक रामबहादुर राय को माधवराव सप्रे पुरस्कार से सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद कैलाश जोशी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वित्त मन्त्री राघवजी ने की।

इस गरिमामय आयोजन में संग्रहालय द्वारा घोषित वर्ष 2010 के विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें बलदेवसिंह पुरस्कार—विवेक चौरसिया, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी पुरस्कार—प्रभु पटैरिया, रामेश्वर गुरु पुरस्कार—प्रवीण शर्मा, झाबरमल्ल शर्मा पुरस्कार—जितेन्द्र रिछारिया, केपी नारायण पुरस्कार—गिरीश शर्मा तथा यशवंत अरगरे पुरस्कार—सुनील मिश्र और विनय उपाध्याय को प्रदान किया गया। साथ ही फोटोग्राफी के लिए होमी ब्यारावाला सम्मान—फोटो जर्नलिस्ट हरेकृष्ण जैमिनी को तथा आरोग्य सुधा पुरस्कार—वीरेन्द्र राजपूत को दिया गया।

'नटवर गीत सम्मान'

शोधपरक सत्-साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य सागर' द्वारा गीत विधा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रवर्तित 'नटवर गीत सम्मान' (रुपये 11000) हेतु इस वर्ष भोपाल के वरिष्ठ गीतकार डॉ० रामवल्लभ आचार्य को प्रतियोगिता के माध्यम से चुना गया है।

वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार

वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार-2010 के लिए मौलिक, अप्रकाशित कहानियाँ आमन्त्रित हैं। पुरस्कार राशि रु० 11,000.00 है, जो कमलेश्वरजी के परिवार ने इस प्रयोजन हेतु 'वर्तमान साहित्य' को प्रदान की है।

कहानियाँ साफ टाइप की हुई हों तथा तीन प्रतियों में हों। कहानी की हर प्रति पर लेखक का नाम व पता अवश्य हो। कहानी भेजने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2010 है। लिफाफे पर 'वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार' अवश्य लिखें। कहानियों का चयन एक निर्णायक-मण्डल द्वारा किया जायेगा। चयनित कहानी पर पुरस्कार जनवरी, 2011 में प्रदान किया जाएगा। ई-मेल से भेजी कहानी प्रतियोगिता में स्वीकार नहीं की जायेगी। कहानियाँ सम्पादक, वर्तमान साहित्य को निम्न पते पर भेजें :

सम्पादक वर्तमान साहित्य, 28, एम०आई० जी०, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़।

राजेन्द्र परदेसी साहित्यकार शृंखला में शामिल

वरिष्ठ साहित्यकार चित्रकार एवं पंजाब कला साहित्य अकादमी (जालंधर) के निदेशक श्री राजेन्द्र परदेसी को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित हिन्दी साहित्यकार की शृंखला में शामिल किया गया है तथा हाल ही में इनको विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ की विद्वत् परिषद् के मानसेवी सदस्य भी मनोनित किया गया है।

स्मृति-शेष

वेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान प्रो० पारसनाथ का निधन

वाराणसी। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य तथा वेदान्त व व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान्, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो० पारसनाथ द्विवेदी का विगत 23 अगस्त को निधन हो गया। वेदान्त के साथ व्याकरण व बौद्ध दर्शन के प्रो० द्विवेदी उद्भट विद्वान रहे। व्याकरण से विद्यावारिधि (पीएचडी) व वेदान्त से वाचस्पति (डीलिट) की उपाधि हासिल करने वाले प्रो० द्विवेदी वर्ष 1978 में संस्कृत विश्वविद्यालय के वेदान्त विभाग में रीडर बने। वर्ष 2006 में यहाँ से अवकाश ग्रहण किया। वर्ष 2007 में राष्ट्रपति व उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान से विशिष्ट पुरस्कार सहित अन्य सम्मान भी पा चुके हैं।

संस्कृतज्ञ प्रो० कैलाशपति का निधन

वाराणसी। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य व संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान प्रो० कैलाशपति त्रिपाठी (73 वर्ष) का 24 अगस्त को रात्रि में निधन हो गया। संस्कृत विश्वविद्यालय में आजीवन आचार्य रहे प्रो० त्रिपाठी को वर्ष 2000 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (दिल्ली) की ओर से महामहोपाध्याय की उपाधि मिली। वर्ष 2005 में राष्ट्रपति पुरस्कार व वर्ष 2006 में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की ओर से सर्वोच्च विश्व भारती पुरस्कार हासिल हुआ। इसके अतिरिक्त करपात्री स्वामी सहित अन्य संस्थाओं से इन्हें दर्जनभर पुरस्कार मिले। कई ग्रन्थ व निबन्ध उनके प्रकाशित हुए हैं।

नहीं रहे आन्दोलनों को धार देने वाले गिर्दा

हल्द्वानी, '.....आज हिमाल तुमुं कै धत्यूं छ... जागो-जागो ओ मेरे लाल' गीत की पंक्तिया अन्तिम दफा गुनगुनाते उत्तराखण्ड के जनकवि जल, जंगल, जमीन और उत्तराखण्ड निर्माण समेत तमाम जन आन्दोलनों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले गिरीश तिवारी 'गिर्दा' का रविवार 22 अगस्त को निधन हो गया। उत्तराखण्ड की लोक चेतना और सांस्कृतिक प्रतिरोध के नित नए और रचनात्मक तेवर अब नहीं दिखेंगे। हाँ, जनसंघर्षों के मोर्चे पर 'गिर्दा' के गीत हमेशा गाए जाएँगे, ये गीत हमें जगाएँगे, लेकिन हुड़के पर थाप देकर, गले की पूरी ताकत लगाने के बावजूद सुर साधकर, हवा में हाथ उछालकर और झूम-झूम कर जनता का जोश जगाते गिर्दा अब वहाँ नहीं होंगे।

विनम्र श्रद्धांजलि

'दक्षिण भारत' के सम्पादक स्वतन्त्रता सेनानी श्री मुनीन्द्र जी का पिछले दिनों निधन हो गया। हैदराबाद से प्रकाशित 'कल्पना' साहित्यिक पत्रिका के वे सम्पादक थे। वे जीवन-पर्यन्त दक्षिण से हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्यों में लगे रहे। इनकी इस कर्मठता को देखकर सरकार ने इन्हें पत्रकारिता जगत सर्वश्रेष्ठ सम्मान 'गणेश शंकर विद्यार्थी' से सम्मानित किया था। हिन्दी जगत ने एक निष्ठावान हिन्दी सेवी पत्रकार खो दिया है।

मेधा देवी का निधन

नारी जागरण एवं शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में अप्रतिम कार्य करने वाली विद्या-व्रत साधिका एवं 'पाणिनी कन्या गुरुकुल' की संस्थापिका उपाचार्या मेधा देवी के निधन से काशी के संस्कृत जगत में शोक व्याप्त हो गया। शोक-विह्वल गुरुकुल की छात्राओं के मंत्रोच्चार के बीच उनकी उत्तराधिकारी डॉ० नन्दिताशास्त्री ने मुखाग्नि प्रदान की।

खिंची चली आएगी पब्लिक गर 'ड्रामा' में हो दम

ख्यातिलब्ध थिएटर आर्टिस्ट नादिरा जहीर बब्बर इस बात से कतई इत्तफाक नहीं रखतीं कि थिएटर अन्तिम साँसें गिन रहा है। उन्होंने कहा कि हर शहर में थिएटर जिन्दा है। कलाकारों का जुनून और उनका आकाश थिएटर है। वे हमेशा से अपने दम पर ड्रामा को मंच का मुकाम देते रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यह अलग बात है कि मौजूदा दौर में थिएटर के इन फनकारों को न तो अपेक्षित फायदा मिल पा रहा है और न ही नाम-पहचान। जहाँ तक पब्लिक की बात है तो 'ड्रामा' में दम होगा तो वह स्वत: थिएटर तक खिंची चली आएगी।

सुश्री बब्बर ने फिल्मों के बाबत उठे सवाल पर कहा कि दो फिल्में किसी भी कलाकार को हिट नहीं बना सकतीं। मायानगरी में सफल होने के लिए अदाकारी के हुनर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण की मुहर जरूरी है। इसके अलावा हुनर का रियाज व कला की सेवा भी आवश्यक है। सीरियलों में वह कब जलवा अफरोज होंगी, के सवाल पर नादिरा ने कहा कि आजकल के सीरियलों में वरिष्ठ कलाकारों को भी खतरनाक माँ या खौफनाक सास के रूप में परोसा जा रहा है।

ऐसी भूमिकाओं का ऑफर लेकर कोई न कोई हर माह मेरे पास आ जाता है जिसमें कतई मेरी रुचि नहीं है। यही वजह है कि सीरियल के लिए अब तक मैंने किसी को हामी नहीं भरी है और कुछ ऐसा ही नजरिया मेरा फिल्मों को लेकर भी है।

पृष्ठ 4 का शेष **(आलमगीर! तुम कहाँ हो ?)**

कितनी विडम्बना है कि एक ओर तो पवित्र प्रेम की डोर में बँधे दो प्राणियों को गोत्र की एकता अथवा जाति की भिन्नता के नाम पर समाज जीने नहीं दे रहा है, उनका तर्क है कि इससे समाज विकृत हो जायेगा। सभी समाज गोत्र में शादी करने लगेंगे। और दूसरी ओर हमारे ये अभिनेता-अभिनेत्रियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छाचारिता का सरकारी पास मिला हुआ है। तिस पर तुर्रा यह कि वे सब अपने छिछोरे व्यवहारों का ठीकरा समाज के ही सिर पर फोड़ रहे हैं यह कह कर कि यह सब हमें दर्शकों के अनुरोध पर करना पड़ता है। मैं समझ नहीं पाता कि वह भारत के किस राज्य का दर्शक-समुदाय है जो इन अभिनेत्रियों को बिकनी पहनने, रतिदृश्य देने अथवा समलैंगिक सम्बन्ध दरशाने के लिये बाध्य कर रहा है? किस दर्शक समुदाय ने फिल्म निर्माता से यह निवेदन किया कि तीन ईडियटों को लैट्रिन के कमोड पर मल त्याग करते हुए ही दिखाओ! इस दृश्य की सार्थकता ही क्या है उस फिल्म में? जब कि फिल्म बेहद अच्छी है।

क्या सूचना एवं प्रसारण-मंत्रालय का यह कर्तव्य नहीं बनता कि वह सिने-कदाचार के पंक में डूबते समाज की चिन्ता करे? हमें कोई गिला-शिकवा नहीं कि बालीवुड के लोगों की निजी जिन्दगी कैसी है? समूचा राष्ट्र जानता है कि देवानन्द-सुरैया, नर्गिस-राजकपूर विवाह नहीं कर पाये। गुरुदत्त ने आत्महत्या क्यों कर ली, यह भी जगजाहिर है। कितनों की शादियाँ फ्लॉप रहीं, कितनों ने संगी-साथी कई बार बदले, कितने मिल कर भी बिछड़ गये ये सब व्यक्तिगत बाते हैं। कोई कुछ भी करे, समाज को उससे क्या लेना-देना है? समाज तो बस उसकी अभिनयकला से जुड़ा है।

परन्तु हमें चिढ़ इस बात से है कि टी०वी० चैनल उनकी इन अमर्यादित कामकथाओं को समाज में प्रचारित-प्रसारित कर रहे हैं। आखिर क्यों? रानी मुखर्जी-आदित्य चोपड़ा के बीच क्या चल रहा है? छोटे नवाब और लहुरी कपूराइन एक क्यों नहीं हो पा रहे हैं? कैटरीना और सलमान के बीच कौन अड़चन आ गयी है? इन कथाओं में आदर्श-तत्त्व, प्रेरक तत्त्व अथवा अनुकरणीय-ग्राह्य तत्त्व क्या है? तो फिर इन दुर्वृत्तों का सार्वजनिक प्रसारण-प्रदर्शन क्यों किया जाता है?

मैं साहित्यकार हूँ। समाज-प्रतिनिधि हूँ। इसलिये मुझे कष्ट होता है सामाजिक विकृति देख कर! फलत: मैं अपनी पीड़ा व्यक्त कर रहा हूँ इस टिप्पणी के माध्यम से। दण्डविधान मेरे हाथ में नहीं। मेरे हाथ में तो बस कलम है, हृदय में सन्ताप और आँखों में आँसू हैं। परन्तु लोगों को यह सच्चाई स्वीकार करनी ही होगी कि यदि घर के एक सदस्य की वेश्यावृत्ति, व्यभिचार तथा मद्यपान से समूचा घर बरबाद हो सकता है तो सिने कलाकारों के बेलगाम कदाचारों से समूचा राष्ट्र भी नष्ट-भ्रष्ट हो सकता है! परन्तु कला निर्माण के लिये होती है, विध्वंस के लिये नहीं!

अत्र-तत्र-सर्वत्र

पैटरसन की दस लाख ई-बुक बिकीं

वाशिंगटन, अपने बेहतरीन उपन्यासों से पाठकों को रोमांचित कर देने वाले अमेरिकी लेखक जेम्स पैटरसन पहले ऐसे उपन्यासकार बन गये हैं जिनकी 10 लाख ई-किताबें बेची गई हैं।

अब दुनिया में रुपये की पहचान

दुनिया भर में अब भारतीय मुद्रा की भी अपनी अलग पहचान होगी। अभी तक यह सम्मान सिर्फ चार देशों की मुद्राओं को ही प्राप्त है लेकिन अब सरकार ने भारतीय रुपये को पहचान देते हुए इसके लिए एक प्रतीक चिह्न या 'सिंबल' देने का एलान किया है। अमेरिकी डॉलर, ब्रिटेन के पौंड स्टर्लिंग, जापानी येन और यूरोपीय संघ के यूरो के बाद रुपया पाँचवी ऐसी मुद्रा बन गया है। जिसे उसके सिंबल से पहचाना जाएगा।

एक साथ देवनागरी के 'र' और रोमन के अक्षर 'आर' से मिलते जुलते इस प्रतीक चिह्न (सिंबल) पर कैबिनेट की मुहर लग गई है। सरकार इस पहचान को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने के लिए एक अभियान शुरू करेगी।

'भारतीय इतिहास का हिस्सा बनना बड़ा सम्मान'

मुंबई। 'अपनी खुशी बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं....भारतीय इतिहास का हिस्सा बनना मेरे लिए बहुत बड़े सम्मान की बात है', यह कहना है भारतीय रुपये को अनोखा प्रतीक चिह्न प्रदान करने वाले डी० उदय कुमार का। आईआईटी, बाम्बे से इंडस्ट्रियल डिजाइन इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल कर चुके 31 वर्षीय कुमार ने चिह्न में देवनागरी लिपि का इस्तेमाल किया है। उन्होंने कहा कि चिह्न का भारतीयकरण करना बहुत महत्त्वपूर्ण था। साथ ही इसे सरल रखते हुए पूरे देश व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य भी बनाना था। इसमें अपनी संस्कृति और प्रकृति की भी झलक दिखनी चाहिए थी। उन्होंने कहा कि यह डिजाइन तिरंगे पर आधारित है। इसके शीर्ष पर दो लाइनें हैं और इनके बीच का स्थान सफेद है। कुमार को इसके लिए पुरस्कार के रूप में ढाई लाख रुपये मिलेंगे। साथ ही, कुमार को आईआईटी, गुवाहाटी में सहायक प्रोफेसर बनाया गया है।

हाईटेक बनाई जाएगी डीरेका की लाइब्रेरी

डीरेका लाइब्रेरी अब हाईटेक बनेगी। इस लाइब्रेरी की नौ हजार पुस्तकों को रेल नेट पर डाला जाएगा। सिर्फ डीरेका कर्मी ही नहीं, आम आदमी भी इस नेट लाइब्रेरी में पढ़ सकता है मनोरंजक पुस्तकें और देख सकता है दुर्लभ चित्र। प्रशासनिक भवन स्थित लाइब्रेरी को ऑनलाइन करने की योजना तैयार कर ली गयी है। इस प्रस्ताव पर शीघ्र ही काम शुरू होगा। यह जानकारी डीरेका के वरिष्ठ राज्यभाषा अधिकारी वी० कुमार ने दी।

डीरेका जहाँ पूरे विश्व में उच्च तकनीकी के इंजन निर्माण के लिए ख्यात है, वहीं उसकी लाइब्रेरी दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह के लिए खासी जानी जाती है। ग्रन्थालय डीरेका कर्मियों की सहित्यिक अभिरुचि को तृप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। रेलवे बोर्ड के अनुसार यह लाइब्रेरी हिन्दी साहित्य के सम्राट व मर्मज्ञ मुंशी प्रेमचंद को समर्पित है।

श्री कुमार ने बताया कि लाइब्रेरी में कहानी, उपन्यास, बाल-साहित्य, चित्रावली, शब्दकोश, वाङ्मय, महिला साहित्य समेत करीब 9000 पुस्तकें उपलब्ध हैं। वेदों के सभी खण्ड, पौराणिक पुस्तकें, संस्कृत साहित्य, आलोचनात्मक निबन्ध, गीता रहस्य के अलावा कई दुर्लभ पुस्तकें भी इस लाइब्रेरी में उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि लाइब्रेरी की पुस्तकों को कम्प्यूटरीकृत करने की दिशा में काम शुरू हो गया है। पुस्तकों के ऑनलाइन होने से डीरेका के पाठक आसानी से पुस्तकों का चयन कर सकेंगे। इस सुविधा से आने वाले दिनों में पाठक विभिन्न विधाओं की सीडी में उपलब्ध पुस्तकें कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ सकेंगे।

जल्द आ रही है, चाचा चौधरी पर 3डी फिल्म

कम्प्यूटर से भी ज्यादा तेज चलने वाले अपने दिमाग से लाखों बच्चों के दिल में जगह बना चुके लोकप्रिय कामिक्स चरित्र चाचा चौधरी को जल्दी ही रजट पट पर देखा जा सकेगा।

लाल पगड़ी पहनने वाले उम्रदराज, कामिक्स की दुनिया के हीरो पर मालिकाना हक रखने वाले डायमण्ड कामिक्स ने उन पर 3डी फिल्म बनाने के लिये अमेरिका की कम्पनी के साथ समझौता किया है। यह डेढ़ घण्टे से लेकर दो घण्टे की 3डी फिल्म होगी। फिल्म का बजट लगभग 60 लाख डालर होगा।

डायमण्ड कामिक्स बिल्लू, कैप्टन व्योम, छोटू लम्बू, पिंकी और महाबली शाका जैसे अपने कामिक्स के अन्य लोकप्रिय चरित्र को भुनाने के लिये इसे बढ़ावा देने हेतु इंटरनेट, टेलीविजन और मोबाइल जैसे डिजिटल प्लेटफार्म के इस्तेमाल की योजना बना रही है। जो फिलहाल 1974 से प्रकाशित लगभग 3,000 से 4,000 कामिक्स को डिजिटल रूप देने पर काम कर रही है। इसे 0.5 डालर (लगभग 23 रुपये) की कीमत पर गूगल और रेडिफ समेत अन्य वेबसाइट पर बेचा जाएगा।

कम्पनी पहले ही मोबाइल फोन के जरिये ई. कामिक्स की बिक्री के लिये टाटा डोकोमो, बीएसएनएल और वोडाफोन जैसी दूरसंचार सेवा प्रदाता कम्पनियों के साथ समझौता कर चुकी है।

आपकी सोच को पढ़ लेगा कम्प्यूटर

कल्पना कीजिए कि आपके कम्प्यूटर मॉनिटर पर वह वेबसाइट अपने आप खुल जाए जिसे आप खोलने की सोच रहे हैं। थोड़ा इन्तजार कीजिए, आपकी कल्पना हकीकत बनने वाली है। वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि वे एक ऐसा कम्प्यूटर विकसित कर रहे हैं जो मानव मस्तिष्क को पढ़ सके।

इंटेल कॉरपोरेशन की एक टीम ऐसी ही एक नई प्रौद्योगिकी पर काम कर रही है जो आपकी सोच को पढ़ सके। इस श्रेणी के मौजूदा कम्प्यूटर में स्क्रीन पर कर्सर को नियन्त्रित करने के लिए शारीरिक हरकत करने जैसा सोचने की जरूरत होती है लेकिन जिस कम्प्यूटर को विकसित करने की बात हो रही है वह इससे अलग होगा।

द टेलीग्राफ के अनुसार वास्तव में वैज्ञानिक शब्दों के लिए दिमाग में होने वाली हलचल का विस्तृत मैप तैयार कर रहे हैं जिसे किसी ऐसे व्यक्ति की दिमागी हलचल से मिलान किया जाएगा जो कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर रहा है। इससे मशीन वह शब्द तय कर लेगी जिसे सोचा जा रहा है।

गूगल के नए लैंग्वेज टूल्स

गूगल ने भारतीय यूजर्स की जरूरतों को देखते हुए अपने लैंग्वेज प्रोडक्ट्स में कुछ नए एड-ऑन शामिल किए हैं—

ट्रांसलेटर टूलकिट : अगर आप गूगल ट्रांसलेशन से संतुष्ट नहीं हैं, तो गूगल ट्रांसलेटर टूल किट आपकी हेल्प कर सकती है। यह टूल किट टेक्निकल प्लस ह्यूमन इंटरफेस पर काम करती है। translate.google.com/toolkit

ट्रांसलिटरेशन : अब आप गूगल ट्रांसलिटरेशन को अपने जीमेल से भी अटैच कर सकते हैं। किसी को हिन्दी में ईमेल भेजना हो, तो सीधे जीमेल पर हिन्दी में टाइप किया जा सकता है। google.com/transliterate/indic

स्क्रिप्ट कन्वर्टर : स्क्रिप्ट कन्वर्टर किसी भी वेबपेज या टेक्स्ट को आपकी भाषा में कन्वर्ट कर सकता है। scriptconv.googlelabs.com

ऑन स्क्रीन कीबोर्ड : अगर आप यूनिकोड में टाइप करते हुए अक्सर कीबोर्ड के शॉर्टकट्स भूल जाते हैं, गूगल ने यूजर्स को ध्यान रखते हुए ऑन स्क्रीन कीबोर्ड की सुविधा मुहैया कराई है। labs.google.co.in/indic. html

प्रधानमन्त्री पर पुस्तक लिखेंगी उनकी पुत्री

नई दिल्ली। प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह की लेखिका बेटी दमनदीप सिंह अपने माता-पिता पर एक पुस्तक लिखने की योजना बना रही हैं, जिसमें वह उनके आज इस मुकाम पर पहुँचने के अनुभवों को साझा करेंगी। मनमोहन सिंह की तीन बेटियों में से मंझली दमन ने कहा, ''मैं इस पुस्तक को उन्हें न केवल माता-पिता बल्कि अलग-अलग व्यक्तित्व के तौर पर भी समझने का जरिया मानती

हूँ।'' दमन का दूसरा उपन्यास 'द सेक्रेड ग्रोव' पिछले सप्ताह ही बाजार में आया है।

पीपली लाइव, प्रेमचंद को श्रद्धांजलि

जब से फिल्म 'पीपली लाइव' रिलीज हुई थी, तब से साहित्य जगत इसके किरदारों में में प्रेमचंद के अमर उपन्यास 'गोदान' और उसके नायक होरी महतो की छवि देख रहा था।

निर्देशक अनुषा रिजवी कहती हैं कि 'पीपली लाइव, प्रेमचंद को मेरी श्रद्धांजलि है।' उन्होंने स्वीकार किया है कि जब वह अपनी पहली फिल्म के किरदारों को विकसित कर रही थीं, तो उनके दिमाग में रह रह कर प्रेमचंद और उनके 1936 में लिखे उपन्यास 'गोदान' का नायक होरी घूम रहे थे। अनुषा ने इस बात को स्वीकार किया है कि उनकी फिल्म में प्रेमचंद के 'उपन्यास' की छाया है और इसीलिए उन्होंने अपनी फिल्म में एक निरीह और कमजोर किसान के किरदार को 'होरी महतो' नाम भी दिया है। अनुषा के अनुसार, ''जब मैं स्क्रिप्ट लिख रही थी, तो होरी लगातार मेरे दिमाग में आ रहा था। इसलिए मैंने एक किरदार को यह नाम देने का फैसला किया। साथ ही मैं यह भी दिखाना चाहती थी कि 'गोदान' से लेकर आज तक के वक्त में होरी के लिए कुछ नहीं बदला। हमने होरी महतो का नाम फिल्म में एक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है।'' 'गोदान' कर्ज में दबे किसान, होरी महतो की करुण गाथा है।

इस उपन्यास में प्रेमचंद ने आधुनिक और औद्योगिक होते भारत में पिछड़ते और उपेक्षित किसान की कहानी कही है। प्रेमचंद का यह आखिरी उपन्यास था। इस पर 1963 में 'गोदान' नाम से ही फिल्म बनी थी। राजकुमार, महमूद और शशिकला अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन त्रिलोक जेटली ने किया था।

टीचर की बात ऐसी लगी कि बन गया शेक्सपीयर!

लंदन। यह कहानी एक छह साल के बच्चे की है। हैरी पॉटर के इस नन्हें फैन को स्कूल में टीचर ने उसकी 'खराब स्टोरी राइटिंग' में सुधार करने को कहा। बच्चे को टीचर की बात दिल पर लग गई। तब उसने कहानी से आगे बढ़ कर, अपने पालतू कुत्ते पर एक लघु उपन्यास लिख डाला। एक पुस्तक प्रकाशन कम्पनी को उसका काम इतना पसन्द आया कि उसने बच्चे को 23 और किताबें लिखने के लिए अनुबन्धित कर लिया। डर्बीशायर के रहने वाले लियो हंटर नाम के इस बच्चे ने अपने कुत्ते पर 'मी एंड माय बेस्ट फ्रेंड' नाम से एक लघु उपन्यास लिखा है।

अमर चित्रकथा में मदर

मदर टेरेसा की 100वीं जयन्ती पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एसीके मीडिया ने मदर को कॉमिक बुक सीरीज अमर चित्रकथा में शामिल किया है। एसीके मीडिया की वाइस प्रेसिडेंट सविता पई का कहना है कि अल्बानिया मूल की होते हुए मदर ने भारत को अपनी जिन्दगी समर्पित कर दी। मदर टेरेसा शीर्षक से प्रथम सीरीज अगस्त में शुरू की जाएगी। प्रिण्ट वर्जन के अलावा मदर टेरेसा की कहानी वेबसाइट इण्डियाप्लाजा, इण्डियाटाइम्स और फ्लिपकार्ट पर ऑनलाइन भी उपलब्ध होगी।

उत्तराखण्ड में एक अनोखा बाल शोध मेला

एक अनोखा मेला, जिसमें न कोई दुकान और न ही खरीददारों की भीड़। मेले में बच्चों की भीड़। चारों तरफ बच्चे-ही-बच्चे। दुकानों के नाम पर स्टॉल ही स्टॉल। स्टॉलों में बेचने के सामान के बजाय जानकारियों का पिटारा। कहीं बच्चों द्वारा लिखी कविताओं का संकलन है तो कहीं कहानियाँ। कहीं पौराणिक औखाड़ों (लोकोक्ति) के अर्थ सहित लगे हैं। किसी स्टॉल में क्षेत्र के मन्दिर व उनकी वास्तुकला के साथ इतिहास का ज़िक्र तो कहीं देखते ही मुँह में पानी आ जाने वाले पकवान बनाने की विधि के साथ सजे हैं। यह सारा नजारा ब्लाक संसाधन केन्द्र मनेरी में चल रहे शोध मेले का है।

उत्तरकाशी के ब्लाक संसाधन केन्द्र मनेरी द्वारा आयोजित बाल शोध मेले में 26 स्कूलों के 300 से ज्यादा बच्चों ने प्रतिभागन किया। अलग-अलग विषयों पर शोध की जानकारी को साझा करने के साथ ही सीखने और सिखाने की प्रक्रिया खुद बच्चे ही कर रहे थे। वे आपस में सीख और सिखा रहे थे। कैंपस में आ रहे बच्चों का पंजीकरण खुद बच्चे ही कर रहे थे। पंजीकरण के बाद बच्चे वजन और लम्बाई नापकर उसका दस्तावेजीकरण कर रहे थे। बाल शोध मेले का उद्घाटन भी बच्चों ने बाल गीत गाकर किया।

बाल शोध मेले के बारे में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के राज्य प्रमुख अनंत गंगोला का कहना है कि शोध मेले से स्कूल से कटे समुदाय को जोड़ने का प्रयास है। आस-पास की चीजों को शिक्षा-शिक्षण में शामिल करने की एक पहल है जिसके केन्द्र में बच्चा है जो खुद ज्ञान की खोज करता है। बच्चे चयनित विषय में शिक्षकों, समुदाय की मदद से शोध के जरिए ज्ञान का सृजन करते हैं। सृजित ज्ञान को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने की तैयारी करते हैं जिससे उनमें खुद करके सीखने और सीखकर अभिव्यक्त करने की दक्षता का विकास होता है।

भारत में पहला डिजिटल पब्लिशिंग हाऊस

भारत में सबसे पहले डिजिटल प्रकाशक बनने का गौरव पुस्तक महल, दरियागंज, नई दिल्ली को प्राप्त है, जो अमेजन वेबसाइट के माध्यम से ई-बुक्स उपभोक्ताओं को डायरेक्ट बेचता है। अपनी पॉकेट में एक लाइब्रेरी का सपना देखने वाले जागरूक प्रयोक्ताओं के लिए यह एक उपहार है।

ग्यारह साल की लेखिका

ईरान में ग्यारह साल की एक लड़की मेलिका गोली को सबसे कम उम्र की लेखिका तथा दानदाता के तौर पर देश की नेशनल रिकॉर्ड लिस्ट में पंजीकृत किया गया है। उसे दुनिया की सबसे कम उम्र की लेखिका के तौर पर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लिए ईरान सरकार ने एक आधिकारिक अनुरोध भी भेजा है। मेलिका की चौदह किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनकी बिक्री से मिलने वाली राशि दुनिया भर के अनाथ बच्चों के लिए देने का ऐलान किया गया है।

हिन्दी भाषायी अल्पसंख्यक

पश्चिम बंगाल में सरकार प्रदेश में हिन्दी भाषियों की संख्या को नगण्य देखते हुए हिन्दी भाषियों को भाषायी अल्पसंख्यक का दर्जा देने जा रही है। इससे हिन्दी भाषा में चल रहे स्कूलों को सरकारी अनुदान तथा दूसरी अन्य सुविधाएँ मिल सकेंगी।

पढ़ने की क्षमता बढ़ाती हैं कहानियाँ

वाशिंगटन। अगर बच्चा हर रात सोते वक्त 20 मिनट तक कहानियाँ पढ़ता है, तो उसकी पढ़ने की क्षमता में कम से कम 10 दिन स्कूल जाने के बराबर वृद्धि होगी। इस सिद्धान्त से प्रोत्साहित होकर अमेरिका के एक गैर सरकारी संगठन ने अभियान चलाया हुआ है, जिसके तहत संगठन बच्चों को रात में 20 मिनट तक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। इसके लिए एक प्रकाशन कम्पनी सोते समय सुनाई जा सकने वाली कहानियाँ प्रकाशित कर रही है।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

अद्‌भुत रहा
अध्यापक से इतिहासकार का सफर
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की जयंती

इलाहाबाद। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को बलिया जिले में हुआ था। सन् 1930-50 तक शांतिनिकेतन में हिन्दी के अध्यापक रहने के बाद वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष बने। वहाँ उन्हें दस वर्षों की अनवरत हिन्दी सेवा छोड़कर जाना पड़ा। दरअसल बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्हें विभाग में कार्यरत सहयोगियों का विरोध झेलना पड़ा था। इसके बाद वह चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष हो गए लेकिन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लौट आए और इस बार 'रेक्टर' का पद सम्भाला।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रो० मुश्ताक अली ने बताया कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने एक निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक और इतिहासकार के रूप में हिन्दी की सेवा की। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आचार्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी साहित्य इतिहास का आदिकाल, जिसका नामकरण रामचन्द्र शुक्ल ने वीरगाथा काल किया था, उसकी आलोचना, खण्डन व मण्डन कर उन्होंने 'आदिकाल' रख दिया। इसका जिक्र उनकी कृति 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' में मिलता है।

इसी प्रकार 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' की रचना उन्होंने गैर हिन्दी भाषियों को हिन्दी भाषा से परिचय कराने के लिए की। इसके अलावा 'हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास' नामक कृति की रचना उन्होंने विद्यार्थियों के हित में की। हिन्दी साहित्य के इतिहास में पहली बार आचार्य ने कबीरदास के काव्य का मूल्यांकन किया।

आचार्य के कई लेख 'सरस्वती' पत्रिका में भी प्रकाशित होते थे। इसके अलावा उन्होंने विशाल भारत व धर्मयुग में लिखा। शांतिनिकेतन से 7 साल तक उन्होंने 'विश्व भारती' पत्रिका निकाली, जिसका सम्पादन उन्होंने स्वयं किया।

उदास है कठघरा चिरानेपट्टी!
जनकवि त्रिलोचन की 91वीं जयन्ती

'अगर जन्म लेने को मैं लाचार न होता, मुझे चिरोनपट्टी से इतना प्यार न होता'। अपनी जन्मभूमि के बारे में ये शब्द हैं हिन्दी के शीर्षस्थ कवि त्रिलोचन शास्त्री के। उनका कहना था— यदि प्रकृति ने मेरी जन्म स्थली चिरानेपट्टी को ही बनाया तो कुछ न कुछ जरूर सोचा होगा। चिरानेपट्टी ने मुझे बनाया है, इन्हीं अर्थों में वह सम्मान की हकदार है।

सुल्तानपुर जिले के दोस्तपुर विकास खण्ड स्थित एक छोटे से गाँव कठघरा चिराने पट्टी में जन्मे कवि त्रिलोचन शास्त्री की 20 अगस्त को 91वीं जयन्ती थी। प्रगतिशील कवियों की मशहूर त्रयी (शमशेर-नागार्जुन-त्रिलोचन) के नायाब हीरे को जन्म देकर कठघरा चिरानेपट्टी को आज गर्व तो है लेकिन वह उदास है। त्रिलोचन शास्त्री ने अपने काव्य प्रवाह के जरिये जिन पात्रों को जीवंत किया था वे आज भी जस का तस विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं।

दस पुरवे के गाँव कठघरा चिरानेपट्टी में त्रिलोचन का घर गाँव के पश्चिमी छोर पर आज भी विद्यमान है। 20 अगस्त 1917 को बाबू जगरदेव सिंह के घर जन्मे बासुदेव ने बाद में त्रिलोचन के रूप में ख्याति अर्जित की। उनकी जाति जीवन पर्यन्त कोई नहीं जान सका। उन्हें त्रिलोचन नाम दिया था संस्कृत के अध्यापक पं० देवदत्त ने। आठ साल की उम्र में चार मील चलकर पं० देवदत्त के पास संस्कृत पढ़ने जाने वाले त्रिलोचन ने उन्हें गुरुदक्षिणा में यह वचन दिया था कि वे जीवन पर्यन्त नाम के साथ जाति नहीं जोड़ेंगे। रिक्शा चलाकर शिव की नगरी काशी में अध्ययन के लिए पैसे जुटाने वाले त्रिलोचन को जब डॉ० सम्पूर्णानन्द ने पहचान लिया तो इस स्वाभिमानी कवि ने उनके प्रस्ताव को ठुकराकर अपने दम पर कई भाषा साहित्य का विषद् अध्ययन किया। नगई महरा, चम्पा निरघिन, बाबा, दुर्जन, करिक्का जैसे कई नायक उनके काव्य संग्रहों के पात्र हैं। जिनके जरिये उन्होंने अपनी और समाज की बात कही। तुलसी-कालिदास को महाकवि मानने वाले त्रिलोचन ने जीवन के अन्तिम पड़ाव में मेरा घर, जीने की कला, अमोला जैसे मशहूर काव्य संग्रह लिखे और साहित्य जगत में धाक कायम की। कवि त्रिलोचन ने एक जगह कहा है ''....उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा-दूखा है नंगा है अनजान है/कला नहीं जानता/कैसी होती है क्या है/वह नहीं मानता कविता कुछ भी दे सकती है/दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँची अब समाज में/ये विचार रह गये नहीं, जिनको ढोता चला जा रहा है/वह अपने आँसू बोता....।'' बिल्कुल यही यथार्थ है जो आज भी कठघरा चिरानेपट्टी की पहचान है।

राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव

वाराणसी। नवगठित नाट्य संस्था 'दशरूपक' कला-संस्कृति सेवा समिति के तत्त्वावधान में पाँच दिवसीय राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आरम्भ स्थानीय नागरी नाटक मण्डली में बुधवार, 25 अगस्त को हुआ। महोत्सव के पहले दिन थिएटर आर्टिस्ट नादिरा जहीर बब्बर एवं अभिनेता अनंत महादेवन की अदाकारी ने 'हम कहें आप सुने' नाटक के जरिए कलाप्रेमियों को मोह लिया। मुम्बई की नाट्य संस्था 'एकजुट' द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले इस नाटक में न सिर्फ अभिनय बल्कि निर्देशन की कमान भी सुश्री बब्बर के हाथों मे थी। महोत्सव का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि वाराणसी मण्डल के आयुक्त ए०के० उपाध्याय ने किया।

महोत्सव में प्रत्येक दिन एक नाटक की प्रस्तुति की गयी। 26 अगस्त को नीपा रंगमंच (लखनऊ) की ओर से 'वांसांसि जीर्णानि' का मंचन किया गया। इसके निर्देशक थिएटर की दुनिया के प्रख्यात निर्देशक सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ थे। 27 अगस्त को जम्मू के नटराज नाट्य कुंज की ओर से अभिषेक भारती के निर्देशन में 'विसर्जन' की प्रस्तुति की गयी, 28 अगस्त का आकर्षण नाटक 'घर वापसी का गीत' था। अल्टरनेटिव लिविंग थिएटर द्वारा प्रस्तुत इस नाटक के निर्देशक संगीत नाटक अकादमी अवार्ड से सम्मानित प्रबीर गुहा थे। 29 अगस्त को ऊषा गांगुली के निर्देशन में महाश्वेता देवी की रचना 'रूदाली' का मंचन किया गया। काशी में सम्पन्न इस नाट्य महोत्सव ने दर्शकों को आकृष्ट किया एवं यहाँ के रंगमंच की सम्भावनाओं को भी विस्तार दिया।

अनूठे रचनाकार थे भैयाजी बनारसी

वाराणसी। हास्य-व्यंग्य के अद्वितीय रचनाकार व पूर्व साहित्य सम्पादक मोहनलाल गुप्त 'भैयाजी बनारसी' की 14वीं पुण्यतिथि पर वाराणसी स्थित वेद भवन में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। आचार्य धर्मशील चतुर्वेदी ने कहा कि भैयाजी हास्य-व्यंग्य के अनूठे रचनाकार थे। साथ ही अपने समय में वाराणसी की साहित्यिक, सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण व प्रभावशाली व्यक्ति भी। ऐसे समाजोन्मुख व समाजसेवी साहित्यकार कम ही मिलते हैं। कवि पं० श्रीकृष्ण तिवारी ने कहा कि वह रचनाकारों के निर्माता भी थे। वशिष्ठ मुनि ओझा, मार्कण्डेय त्रिवेदी, जितेन्द्रनाथ मिश्र आदि ने उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

हिन्दी के गौरव-ग्रन्थ कामायनी पर विद्वानों की संगोष्ठी

चेन्नई की प्रसिद्ध संस्था 'साहित्यानुशीलन समिति' ने शनिवार, 7 अगस्त 2010 को हिन्दी के छायावादी युग की प्रतिनिधि रचना 'कामायनी' पर एक विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता हिन्दी और तमिल के वरिष्ठ विद्वान् डॉ० एन० सुन्दरम् ने की। समिति के अध्यक्ष डॉ० इन्दर राज बैद ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि महाकवि जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' काव्य के रूप में हिन्दी को एक आधुनिक गौरव-ग्रन्थ प्रदान किया है। समिति ने इस अद्वितीय कृति की समग्र समीक्षा इसके पन्द्रह सर्गों के आधार पर करवाने का सुनिश्चय किया है।

समिति के संस्थापक स्व० पं० रामानन्द शर्मा के सन् 1970 में लिखे विशिष्ट आलेख—'कामायनी की कलात्मकता' के वाचन के साथ संगोष्ठी प्रारम्भ हुई। डॉ० चुन्नीलाल शर्मा ने 'कामायनी का मनोवैज्ञानिक विवेचन' प्रस्तुत किया। डॉ० निर्मला मौर्य ने कामायनी के 'चिन्ता' सर्ग, डॉ० नज़ीम बेगम ने 'लज्जा' सर्ग, डॉ० विद्या शर्मा ने 'श्रद्धा' सर्ग तथा काव्य के 'आशा' सर्ग का विमर्श प्रस्तुत किया डॉ० अशोक कुमार द्विवेदी ने। समिति की ओर से सभी अनुशीलकों को सम्मान के प्रतीक के रूप में लेखनी प्रदान की गई।

पहले से तजबीज कर नहीं बनती कोई कला : दूधनाथ सिंह

कोई भी रचनाकार हर बार विस्फोटक और क्लासिकल कहानियाँ नहीं लिख सकता तथा सिर्फ कुछ तत्त्वों के शामिल कर देने भर से कहानी नहीं बनती। आदि और अन्त का फैसला करके भी कहानी नहीं लिखी जाती तथा कहानी अपनी शुरुआत के बाद अपना अन्त स्वयं तय नहीं करती है। उक्त बातें वरिष्ठ कथाकार दूधनाथ सिंह ने नीलम शंकर के पहले कहानी संग्रह 'सरकती रेत' पर महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय विस्तार केन्द्र द्वारा आयोजित पुस्तक चर्चा कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहीं। हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति एवं वरिष्ठ कथाकार विभूतिनारायण राय ने कहा कि नीलम शंकर की कहानियों की भाषा प्रवाहपूर्ण है यह लेखिका का पहला कहानी संग्रह है इसका स्वागत किया जाना चाहिए।

नव साम्राज्यवाद और प्रेमचंद

नव साम्राज्यवाद के खिलाफ आज राष्ट्रीय स्तर पर कोई आन्दोलन खड़ा कर नहीं लड़ा जा सकता है। उसके लिए नए तरीके से तैयारी कर नए औजारों के साथ लड़ना होगा। नव साम्राज्यवाद के दौर में राष्ट्र की सत्ता खतरे में है। राष्ट्र के ऊपर और नीचे दोनों तरफ से खतरे हैं। स्थानीयता को प्रमोट किया जा रहा है। मानव सभ्यता संक्रमण के दौर से गुज़र रही है। चुनौतियाँ अधिक हैं, हमारा समाज तात्कालिकताग्रस्त है, दूरगामी उपाय नज़र नहीं आ रहे। आत्मकेन्द्रित होना आज के समय का मुख्य स्वर है। देखना यह होगा कि नव साम्राज्यवाद को समझने के लिए प्रेमचंद हमारी कितनी मदद करते हैं। यह एक बड़ा सवाल है, क्योंकि नव साम्राज्यवाद पूँजीवाद का चरम उत्कर्ष है। निश्चित तौर पर लेखन के स्तर पर प्रेमचंद बहुमुखी हैं, किन्तु उनके बाद दुनिया बहुत बदली है। प्रेमचंद के साहित्य में कर्ज एक बड़ा फैक्टर है, जो आज की सबसे बड़ी समस्या है। प्रेमचंद हमें नव साम्राज्यवाद के खिलाफ प्रतिरोध की शक्ति देते हैं। उक्त बातें प्रसिद्ध इतिहासकार और चिन्तक लालबहादुर वर्मा ने 3 अगस्त को महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय विस्तार केन्द्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में 'नव साम्राज्यवाद और प्रेमचंद' विषय पर आयोजित गोष्ठी में कही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार दूधनाथ सिंह ने की।

वंचितों की संघर्ष गाथा का आख्यान

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय विस्तार केन्द्र ने अपने आयोजनों की कड़ी में वंचितों की संघर्षगाथा को बयां करती तीन डाक्यूमेंट्री का प्रदर्शन केन्द्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में किया। परिवेश, इलाहाबाद एवं संजय जोशी के सहयोग से प्रदर्शित इन वृत्त चित्रों के नाम थे—गांव छोड़ब नाहीं, टू डाइ फॉर लैण्ड : द अल्टीमेट सेक्रीफाइस एवं 1000 डेज एण्ड ए ड्रीम। इन वृत्त चित्रों में ग्रामीण पलायन, अति पिछड़ों का दर्द, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बढ़ते दखल के कारण गहराती पानी की किल्लत, आदिवासियों का शोषण और विस्थापन आदि पर जमकर प्रहार किया गया। जिसके उदारवाद और बाजारवाद का घिनौना चेहरा बखूबी मुखरित हुआ। केरल के सामाजिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों से जुड़े रहे एवं गत अप्रैल माह में एक ट्रेन दुर्घटना में दिवंगत हुए मलयाली भाषी सी० सरतचन्द्रन के इन वृत्त चित्रों को वंचितों की संघर्ष गाथा का आख्यान कहा गया।

डॉ० उदयनारायण तिवारी की स्मृति में व्याख्यान

सुविख्यात भाषाविद डॉ० उदयनारायण तिवारी की स्मृति में हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद में एक व्याख्यान का आयोजन हुआ। 'आदिकालीन मानक हिन्दी और गोरखनाथ' विषय पर बोलते हुए मुख्य वक्ता, डॉ० कमल सिंह (अलीगढ़) ने कहा कि मानक हिन्दी के प्रथम कवि गोरखनाथ हैं। डॉ० सिंह ने गोरखनाथ से लेकर दक्खिनी हिन्दी तक मानक हिन्दी की शृंखला की सात कड़ियों की चर्चा की।

कवि स्वदेश भारती के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

हैदराबाद में गीत चाँदनी और गोलकोंडा दर्पण विचार मंच, के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय कवि, उपन्यासकार, संस्थापक अध्यक्ष राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी कोलकाता, स्वदेश भारती के नगरागमन पर पण्डित नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला में 'एक शाम स्वदेश भारती के नाम' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वदेश भारती ने 'आज की कविता में नव प्रवाह' विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जो कविता सम्प्रेषित नहीं होती, वह अपना प्रभाव नष्ट कर देती है। कविता का धर्म समाज को जागृत करना है और कवि का कर्म चिंतन को शब्दों में ढालना है। आज की कविता में विघटनवादी तत्त्व और गिरोहबंदी का प्रवेश हो गया है। यदि समय रहते इसे न रोका जाए, तो अगले 20 वर्षों में कविता का पतन आरम्भ हो जाएगा। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० राधेश्याम शुक्ल ने कहा कि आज रचनाकार कम और समीक्षक अधिक हैं। आलोचना के मानदण्ड बदल गये हैं। उन्होंने कहा कि कविता सामाजिक परिवर्तन के लिए माध्यम होती है। नित्य लेखन से शिल्प तथा भाषा में सुधार सम्भव है, परन्तु कविता के लिए नित्य चिन्तन आवश्यक है। नये परिवर्तन में सौन्दर्य की तलाश होनी चाहिए।

व्याख्यानमाला आयोजित

14 अगस्त को इलाहाबाद के 'होटल प्रयाग-इन' के भव्य सभागार में 'इटावा हिन्दी सेवा निधि' के तत्त्वावधान में आयोजित आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला का तृतीय व्याख्यान कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल एवं 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी की अध्यक्षता में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के 150वें वर्ष के सुयोग पर आयोजित हुआ, जिसका विषय था 'रवीन्द्रनाथ टैगोर नवजागरण एवं भारतीय भाषाएँ'। मुख्य वक्ता थे साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव, बहुभाषाविद्, साहित्यकार प्रो० इंद्रनाथ चौधुरी, जिन्हें इस अवसर पर 'आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री हिन्दी सेवा सम्मान' से विभूषित भी किया गया। आतिथेय व्याख्याता थे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ० मानस मुकुल।

कलम के पुरखों का श्राद्ध-अनुष्ठान

31 जुलाई को कलम के जिन सिपाहियों ने भारतीय पत्रकारिता की सुदृढ़ नींव रखी और अपने श्रमस्वेद से इसे पुष्पित-पल्लवित किया, संघर्ष और समर्पण का ऐसा गौरवशाली इतिहास रचा कि पत्रकारिता 'मिशन' के रूप में समादृत हुई। उन तपस्वी सम्पादकों की स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के उद्देश्य से माधवराव सप्रे समाचार-पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल ने स्मृति वाटिका लगाई है। पूर्वज सम्पादकों के इस श्राद्ध-अनुष्ठान की शुरुआत नर्मदा के मानस पुत्र श्री अमृतलाल वेगड़ ने अशोक का पौधा रोपकर की। उनके साथ-साथ अन्य अतिथियों ने भी पौधे रोपे। इनमें से प्रत्येक पौधे को किन्हीं एक मूर्धन्य सम्पादक का नाम दिया गया है। पौधों की देखरेख का दायित्व पत्रकार, साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं समाजकर्मी ले रहे हैं।

'सुपर पावर ?' पुस्तक का लोकार्पण

16 अगस्त को नई दिल्ली के ताज पैलेस होटल में प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित सुप्रसिद्ध मीडिया विशेषज्ञ एवं उद्यमी श्री राघव बहल की पुस्तक 'सुपर पावर ?' का लोकार्पण केन्द्रीय राजमार्ग मन्त्री श्री कमलनाथ के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यूनीक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ

इंडिया के चेयरमैन श्री नंदन नीलकेनी, रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर श्री विमल जालान, सेबी के पूर्व अध्यक्ष श्री एन० दामोदरन तथा 'इंडियन एक्सप्रेस' के सम्पादक श्री शेखर गुप्ता ने अपने विचारपूर्ण वक्तव्य दिए।

'जिस घर में / नहीं होती औरत' लोकार्पित

वरिष्ठ साहित्यकार श्री सदाशिव कौतुक के सद्य: प्रकाशित काव्य संग्रह 'जिस घर में / नहीं होती औरत' का लोकार्पण भोपाल के दुष्यंत कुमार पाण्डुलिपि संग्रहालय में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि प्रो० भगवत रावत ने की।

प्रो० नामवर सिंह द्वारा पुस्तकों का लोकार्पण

4 अगस्त को राजधानी के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में श्री परवेज अहमद के दो नाटक संकलन 'ये धुआँ सा कहाँ से उठता है' और 'छोटी ड्योढ़ीवालियाँ' का विमोचन वरिष्ठ आलोचक प्रो० नामवर सिंह, कवि श्री अशोक वाजपेयी और श्री अली जावेद ने किया।

'अम्बु कृष्णायण' का लोकार्पण

कोलकाता में राजस्थानी भाषा में प्रकाशित नैणसी मासिक के सम्पादक श्री अम्बुशर्मा द्वारा रचित 667 पृष्ठीय चि० प्रदीपबाबू ढेडिया 'अम्बु कृष्णायण' का भव्य लोकार्पण सॉल्ट-लेक-स्टेडियम में फूलों की होली कार्यक्रम में जोधपुर के भागवत-कथावाचक राधाकृष्णजी महाराज के कर-कमलों द्वारा किया गया।

'नयी चुनौतियाँ और वैकल्पिक मीडिया'

आवारा पूँजी की मीडिया पर पकड़ मजबूत हुई है और इस पकड़ ने खबर को मनोरंजन में बदल दिया है। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के जनपद विभाग और मीडिया अध्ययन केन्द्र के साझे में हुए 'नयी चुनौतियाँ और वैकल्पिक मीडिया' विषय पर पत्रकार अनुराग चतुर्वेदी ने अपने व्याख्यान में कहा कि मनुष्यता की पहचान और हिंसा रहित समाज के लिए वैकल्पिक मीडिया की जरूरत हमेशा बनी रहेगी। चतुर्वेदी ने विश्व मीडिया के प्रमुख चैनलों, समाचार पत्रों एवं वेबसाइट्स की चर्चा करते हुए कहा कि पूँजी और मीडिया का गठजोड़ स्वत: नहीं टूटेगा इसके लिए छोटे छोटे प्रयासों की निरन्तरता जरूरी है।

मीडिया विशेषज्ञ डॉ० माधव हाड़ा ने कहा कि परिवर्तन की गति को तकनीक ने बेहद तेज कर दिया है और इसकी भाषाई साहित्यिक अंतर्क्रियाएँ बढ़ रही हैं। समन्वयक डॉ० पल्लव ने लघु पत्रिकाओं का सन्दर्भ देते हुए कहा कि मीडिया में सच्चे जन पक्ष का निर्माण करने मे इन पत्रिकाओं की बड़ी भूमिका है। अध्यक्षता कर रहे लोक शिक्षण प्रतिष्ठान के निदेशक श्री सुशील कुमार ने कहा कि टीआरपी को नियन्त्रित करने की शक्ति पाठकों और दर्शकों के हाथों में है। इस शक्ति का उपयोग करते हुए मीडिया की विकृतियों से लड़ना होगा।

बाजारवाद में फँसकर पत्रकारिता अपने मिशन को भूल गयी

पत्रकारिता बुरी तरह बाजारवाद में फँसकर रह गई है। जो पत्रकारिता का कार्य था उसको पूरी तरह भुला दिया गया है। गणेश शंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णुराव पराड़कर के योगदान को भुलाकर पत्रकारिता अपने मिशन से भटक गई है। ये विचार भारतीय पत्रकारिता संस्थान के निदेशक सुरेन्द्र बीनू सिन्हा ने संस्था के 27वें वार्षिकोत्सव में 'बाजारवाद और पत्रकारिता' विषय पर आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो० सत्यपाल गौतम ने की।

श्री गुलाब कोठारी की पुस्तक का लोकार्पण

16 अगस्त को संसद भवन में लोकसभाध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने सभापति-कक्ष में 'राजस्थान पत्रिका' के सम्पादक श्री गुलाब कोठारी की सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'कृष्णतत्त्व की वैज्ञानिकता' का लोकार्पण किया। सांसद तथा भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने अध्यक्षता की तथा कृष्ण के महत्त्व तथा पुस्तक की उपयोगिता पर अपने विचार प्रकट किए। 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी मुख्य अतिथि थे।

डॉ० महेश गौतम रचित पुस्तकों का विमोचन

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल पटियाला में डॉ० हुकुमचंद राजपाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई मालवा साहित्य कला मंच की गोष्ठी में प्रसिद्ध पत्रकार एवं चढ़दीकला टाइम टी०वी० के चेयरमैन श्री जगजीत सिंह दर्दी द्वारा डॉ० महेश गौतम रचित 'श्री गुरु नानक देव चरित' तथा 'ऐसे जिया जाता है' इन दो पुस्तकों का विमोचन किया गया।

काव्य-संग्रहों का लोकार्पण

12 अगस्त को दिल्ली में श्री सुधीर सागर के कविता संग्रह 'बस, एक बार सोचो' और सुश्री कुंती के काव्य-संग्रह 'अँधेरे में कंदील' का लोकार्पण साहित्य अकादेमी सभागार में अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री एस०एस० नूर, रमणिका फाउंडेशन की अध्यक्ष श्रीमती रमणिका गुप्ता और कवयित्री श्रीमती अनामिका ने किया।

शमशेर और अज्ञेय जन्मशती के अवसर पर पुस्तकों का प्रकाशन

प्रकाशकों की बैठक का आयोजन प्रसिद्ध कवि-आलोचक श्री अशोक वाजपेयी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें अज्ञेय और शमशेर की जन्मशतियों के उपलक्ष्य में तैयार कराई जा रहीं पुस्तकों के प्रकाशन को लेकर विचार हुआ। शमशेर और अज्ञेय की समग्र रचनाएँ, उनके साक्षात्कार, पत्र, आलोचनाएँ, चिंतन, संस्मरण, रचना-संचयन आदि के प्रकाशन का दायित्व विभिन्न प्रकाशकों ने स्वीकार किया।

यह पहली बार हो रहा है कि देश के प्रमुख हिन्दी प्रकाशक हिन्दी के दो कालजयी लेखकों की जन्मशती में संयुक्त रूप से शामिल हो रहे हैं और इतनी बड़ी संख्या में उनकी और उन पर पुस्तकें प्रकाशित करने जा रहे हैं।

'उजाले दूर नहीं' लोकार्पित

31 जुलाई को कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद के तत्त्वावधान में नगर की सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती पवित्रा अग्रवाल के द्वितीय कहानी संग्रह 'उजाले दूर नहीं' का लोकार्पण राजस्थानी स्नातक भवन में सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती समारोह सम्पन्न

3 अगस्त को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती आजाद भवन सभागार, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली में डॉ० रत्नाकर पाण्डेय की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाई गई। मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री प्रदीप कुमार जैन। 'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्त शिरोमणि पुरस्कार-2010 श्री मानिक बच्छावत द्वारा रचित काव्यग्रन्थ 'इस शहर के लोग' के लिए प्रदान किया गया। 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त गरिमा पुरस्कार-2010' डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' को उनके काव्यग्रन्थ 'वैदुष्मणि विद्योत्तमा' के लिए, 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रवासी भारतीय पुरस्कार-2010' सुश्री दिव्या माथुर के काव्यग्रन्थ 'झूठ, झूठ और झूठ' के लिये, 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान-2010' श्रीमती अनुपमा गुप्ता को उनकी पुस्तक 'कुरुक्षेत्र बनाम कलिक्षेत्र' के लिए प्रदान किया गया।

बुंदेली समारोह : 2010

मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर ने अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल द्वारा आयोजित 'बुंदेली समारोह : 2010' में बुंदेली के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कैलाश मड़बैया द्वारा लिखित दो ग्रन्थ, प्रथम सचित्र शौर्य केन्द्रित ऐतिहासिक खण्ड काव्य 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' और प्रमाणित इतिहास की कृति 'विंध्य के बाँकुरे' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के चालीस जिलों से आये प्रतिनिधि साहित्यकारों के बीच किया। इनकी समीक्षा आलोचक डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया और देवेन्द्र

जैन ने की। इस अवसर पर बुंदेली गद्य के सृजन और मानकीकरण पर शोध आलेख पढ़े गये।

'समाचारों की दुनिया में'

जयपुर के पिंक सिटी क्लब में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार गुलाब बत्रा की पुस्तक 'समाचारों की दुनिया में' का नवभारत टाइम्स के पूर्व सम्पादक डॉ० नंद किशोर त्रिखा ने लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि समाचार-पत्र के मालिक का राजनीतिक विचार भले ही कुछ भी हो, पर पाठक को सत्य और तथ्य जानने का पूरा-पूरा अधिकार है। समाचार-पत्र में भाषायी गुणवत्ता और जनहितार्थ उपयोगी सामग्री होनी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्याम आचार्य ने की।

कबीर-प्रेमचंद-तुलसी

काशी के ही कबीर-प्रेमचंद-तुलसी की जयंतियों पर गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के हिन्दी विभाग के छात्रों-अध्यापकों द्वारा संगोष्ठियाँ एवं कार्यक्रम आयोजित किये गये।

पोर्टब्लेयर में प्रेमचंद जयन्ती पर संगोष्ठी

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी की 131वीं जयन्ती पर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर में हिन्दी साहित्य कला परिषद के तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था—'भूमण्डलीकरण का वर्तमान सन्दर्भ और प्रेमचंद का कथा साहित्य'। मुख्य अतिथि थे चर्चित साहित्यकार और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के डाक निदेशक कृष्ण कुमार यादव। संगोष्ठी को अध्यक्ष आर०पी० सिंह, डॉ० रामकृपाल तिवारी आदि ने सम्बोधित किया।

राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी सम्पन्न

मसूरी (उत्तराखण्ड) में बच्चों की पत्रिका 'बालप्रहरी' एवं सिद्ध संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी में 'बालसाहित्य एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया' विषय पर व्यापक चर्चा हुई। 'बाल कविता विश्लेषण' विषय पर आयोजित सत्र में बच्चों ने निर्विवाद रूप से कविताओं का विश्लेषण किया। उद्घाटन सत्र में बालसाहित्य की 20 पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

'नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती'

नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में डॉ० अरुणा मुकिम की 'नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती' शीर्षक पुस्तक का विमोचन केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री अजय माकन ने किया। फिल्म निर्माता और निर्देशक महेश भट्ट ने कहा कि लेखिका ने इस पुस्तक के माध्यम से नारी के बदलते स्वरूप और उसकी अस्मिता की जो व्याख्या की है, वह सराहनीय है। वरिष्ठ गीतकार डॉ० कुँवर बेचैन ने लेखिका को शॉल प्रदान कर अभिनन्दन किया।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का जुलाई 2010 अंक प्राप्त हुआ। अनेक प्रकार की साहित्यिक सूचनायें एवं महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की जानकारी से पूर्ण तथा अंक की सम्पादकीय के साथ पत्रिका मन को छू गई। सम्पादकीय में 'बाजार में नहीं मिलते संस्कार' बेहद विचारोत्तेजक और सामयिक हैं। आज की शिक्षा-व्यवस्था पर जहाँ चोट की गई है, वहीं कुछ ठोस सुझाव भी प्रस्तुत किया गया है। सम्पादकजी का यह सुझाव काबिले तारीफ है कि राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रशासन जैसे मजबूत तन्त्र की तरह इस शिक्षा-तन्त्र को मजबूत बनाने की जरूरत है ताकि मौजूदा प्रतिस्पर्द्धा के बीच अनुशासन, गुणवत्ता और उत्तम परिणाम की दृष्टि से यह राष्ट्रीय शिक्षा-तन्त्र एक मानक रूप बन सके। प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र का आलेख 'भीख! तेरे रूप अनेक' बहुत ही मार्मिक और कटु यथार्थ से भरा हुआ है। उन्होंने अपनी बात गोबरहा खाने से प्रारम्भ करके आगे बढ़ाया है। कभी लोकसभा में गाजीपुर के एक सांसद ने गोबरहा के गेहूँ की गठरी को खोलकर सम्पूर्ण देशवासियों के सम्मुख पूर्वांचल की गरीबी का मुद्दा उठाया था। तब तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० नेहरू अत्यन्त द्रवित हो उठे थे और उन्होंने पूर्वांचल के विकास हेतु पटेल कमीशन की नियुक्ति की थी। सचमुच आज तो सारा देश ही भिखमंगई और लुच्चई पर उतरा हुआ है। प्रोफेसर मिश्रजी को बहुत-बहुत साधुवाद।

डॉ० सुरेन्द्र गम्भीर का आलेख 'परदेस में हमारी हिन्दी' एक सकून भरा संदेश है। देश में न सही, कम से कम हिन्दी भाषा का सम्मान अमेरिका जैसे विकसित देश में तो हो रहा है। महत्त्वपूर्ण आलेखों को प्रकाशित करने के लिये आप कोटिश: आशंसा के पात्र हैं।

—डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी, गोरखपुर

'भारतीय वाङ्मय' नियमित रूप से मिल रहा है और मैं उसका नियमित पाठक भी हूँ और प्रशंसक भी। अपने छोटे से सादा कलेवर में यह पत्रिका अन्य अनेक पत्रिकाओं से श्रेष्ठ है। प्रत्येक अंक में पिछले मास की साहित्यिक गतिविधियों का परिचय तो मिलता ही है, परन्तु उससे कहीं अधिक कुछ ऐसे उपयोगी लेख होते हैं जो प्राय: अन्य पत्रिकाओं में देखने को नहीं मिलते। आपका सम्पादकीय सबसे पहले पढ़ता हूँ।

मेरी हार्दिक बधाई और शुभ कामनाएँ!

—विश्वनाथ
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है, तदर्थ धन्यवाद। हर बार पूज्य बाबूजी की याद ताजा हो जाती है। इस लघु पत्रिका की निरन्तरता को बनाये रखने के साथ-साथ आपने इसे नये आयाम दिये हैं और इसे नयी ऊँचाइयों तक पहुँचाया है, यह मैं कह सकता हूँ। हर अंक का सम्पादकीय प्रासंगिक और धारदार होता है। सामग्री का चयन भी सदा की भाँति स्तरीय और संतुलित होता है। साहित्य जगत की गतिविधियों की कोई भी उल्लेखनीय सूचना शायद ही छूट पाती है। पूज्य बाबूजी के द्वारा प्रज्ज्वलित इस साहित्य शिखा को आपने जिस श्रद्धा और समर्पण के साथ जलाये रखा है उसके लिए आप निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं। ईश्वर आपको सफलता और प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाये, यही कामना करता हूँ।

—राजेन्द्र केडिया, कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' का जुलाई 2010 अंक मिला। एतदर्थ कोटिश: धन्यवाद। आपका सम्पादकीय शिक्षा के बाजारीकरण पर चोट करता है, साथ ही उसका समाधान भी प्रस्तुत करता है। वस्तुत: अन्य वस्तुओं की भाँति शिक्षा भी अब 'बिकाऊ माल' हो गई है और शिक्षालय व्यापारिक प्रतिष्ठान। पैसे के बल पर अब कोई भी डिग्री हस्तगत की जा सकती है, शिक्षा प्राप्ति में अब तपस्या, साधना का भाव कहाँ रहा? भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जितने प्रयोग किए जाते हैं, अन्यत्र दुर्लभ हैं।

अंक में प्रकाशित 'भीख! तेरे रूप अनेक' तथा 'परदेश में हमारी हिन्दी' शीर्षक लघु आलेख भी ज्ञान-चक्षु का विस्तार करते हैं। साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचार तो पत्रिका की उपादेयता को द्विगुणित कर देते हैं। साधुवाद!

—डॉ० वीरेन्द्र परमार, फरीदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' का जुलाई अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। इस अंक में आपका सम्पादकीय 'बाजार में नहीं बिकते संस्कार' बहुत सटीक और प्रासंगिक है। संस्कार शिक्षा के साथ जुड़े हैं परन्तु आज कल शिक्षक और शिक्षा का सम्बन्ध भी पैसे में तुलता है। शिक्षक केवल वेतन भोगी रह गये हैं। वैसे भी आदमी बाजारू हो गया है, सब कुछ व्यवसाय बन गया है। घर में भी संस्कारों के लिए अवसर और अवकाश कहाँ बचा है। संस्कारों को सिखाने के लिए स्वयं संस्कारी बनना पड़ता है।

सर्वेक्षण से पता चलता है कि रूढ़िवादी सोच की जड़ें इतनी गहरी हैं कि लोग विश्व में हो रहे परिवर्तन को उसके स्वस्थ रूप में स्वीकार नहीं करते। खाप पंचायत ने जाति एवं गोत्र को लेकर बहुत विवाद किया है किन्तु यदि उनका कोई व्यक्ति विदेशी युवती को ले आता है विवाह करके तो पंचायत मौन रहती है, कोई विरोध नहीं करती, न उसके लिए जाति या गोत्र का प्रश्न उठाती है।

आपकी छोटी सी पत्रिका है परन्तु देश भर की आवश्यक जानकारी प्रदान करने की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।

—लक्ष्मी रूपल, पंचकुला, हरियाणा

पुस्तक परिचय

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क

डॉ० आर० गणेशन्

पृष्ठ : 320 + 48 पृ० चित्र

अजि. : रु० 250.00 ISBN : 81-7124-301-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'संग्रहालय' विलक्षण वस्तुओं के ऐसे आलय हैं जिनमें मानव विकास की सभी सम्भावनाएँ निहित हैं। एक सामाजिक संस्था के रूप में संग्रहालय महत्त्वपूर्ण आदर्श संस्कृति केन्द्र हैं जो विभिन्न वर्ग एवं काल के व्यक्तियों की सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रकट करते हैं।

आज विश्व के सभी संग्रहालय उच्च कोटि की प्रमुख जन-संस्था के रूप में जाने जाते हैं और तेजी से बदलते हुए इस दौर में इनका महत्त्व बढ़ता ही जा रहा है।

यह बड़े दु:ख का विषय है कि अभी तक भारत में अधिकांश संग्रहालय जनसम्पर्क के महत्त्व से अनभिज्ञ हैं। कोई ऐसी पुस्तक भी उपलब्ध नहीं है जो भारतीय परिप्रेक्ष्य में जन-सम्पर्क के व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित कार्यक्रमों को प्रस्तुत करते हुए संग्रहालयों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके। इन परिस्थितियों में डॉ० आर० गणेशन् की पुस्तक 'भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क' न केवल सामयिक वरन् बहुत महत्त्वपूर्ण है। 'भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क' पुस्तक का प्रणयन इसी कमी को दूर करने के उद्देश्य से किया गया है।

पुस्तक बारह अध्यायों में विभाजित है जिसके अन्तर्गत विषय के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों का सटीक विवेचन किया गया है।

पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में जन-सम्पर्क से सम्बन्धित विषयों की पृथक् पृथक् व्याख्या की गई है ताकि उन्हें संग्रहालयों के प्रचार एवं जन-सम्पर्क के निमित्त प्रभावी बनाया जा सके। संग्रहालयों के प्रचार माध्यमों को सफल एवं प्रभावी तभी बनाया जा सकता है जब उनमें कुशल एवं अनुभवी जन-सम्पर्क अधिकारी स्थाई तौर पर नियुक्त किये जाएँ। क्षेत्रीय प्रेस, आकाशवाणी और दूरदर्शन से मधुर सम्बन्ध और उनका सहयोग नितान्त आवश्यक है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई फिल्मों और तथ्यपरक चलचित्रों (डाक्यूमेन्ट्री) के प्रदर्शन द्वारा जनता को आकृष्ट करने में विशेष सहायता मिलती है। इनके द्वारा उनका ज्ञान-वर्द्धन भी होता है। संग्रहालयों द्वारा समय-समय पर निकाले गए विभिन्न प्रकार के प्रकाशनों का अपना महत्त्व है। परन्तु जन-सम्पर्क के लिए छोटे और आकर्षक सामान्य प्रकाशन, जैसे प्रदर्शिका (गाइड बुक), विशिष्ट कलाकृतियों को दर्शाते प्रचार-पत्र, फोल्डर, संक्षिप्त कैटलॉग अधिक लोकप्रिय एवं प्रभावी सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार संग्रहालयों द्वारा विशेष अवसरों पर आयोजित कार्यक्रम तथा दीर्घा-वार्ता आदि उनकी लोकप्रियता के वर्द्धनार्थ उपयोगी हो सकते हैं। पुस्तक में और कितने ही नवीन संचार माध्यमों की सविस्तार चर्चा की गई है जो किसी भी संग्रहालय के लिए अनुकरणीय हैं।

अन्त में लेखक ने इस पुस्तक में 'संग्रहालय विपणन' का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया है जो आज सम्पूर्ण विश्व में चर्चा का विषय है। 'संग्रहालय विपणन' के विषय में अभी भारतीय संग्रहालय अधिक जागरूक नहीं है। अधिकतर भारतीय संग्रहालय सरकारी अनुदानों द्वारा चलाए जा रहे हैं। उनके समस्त व्यय का वहन भारत सरकार या फिर राज्य सरकारों द्वारा होता है। इस प्रकार एक बड़ी धनराशि भारतीय संग्रहालयों के रख-रखाव में व्यय होती है जिसका भुगतान राज्यों को करना पड़ता है। धन के अभाव में राज्य सरकारें पर्याप्त अनुदान नहीं दे पातीं जिसके कारण संग्रहालय प्राय: अपना दायित्व भली-भाँति नहीं निभा पाते। कुछ समय पूर्व अमेरिका में किये गये एक सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ था कि संग्रहालयों में रखे गए प्रदर्श के सही रख-रखाव के लिए कम से कम वार्षिक एक हजार डालर की आवश्यकता पड़ती है। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि किसी भी संग्रहालय के समुचित संचालन के लिए कितनी बड़ी धनराशि की आवश्यकता पड़ती है। अपने धनाभाव को दूर करने के लिए संग्रहालयों द्वारा अपनाई गई विधिवत् नीतियों को ही मोटे तौर पर 'संग्रहालय विपणन' की संज्ञा दी जाती है। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में इस तथ्य को भी बहुत सुन्दर ढंग से वर्णित किया है। पुस्तक सचित्र है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि डॉ० गणेशन् की पुस्तक 'भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क' आज के सन्दर्भ में देश के सभी प्रकार के संग्रहालयों के लिए मार्ग दर्शन का कार्य करेगी। इसकी उपयोगिता न केवल संग्रहालयों तक सीमित है वरन् देश के पुस्तकालय एवं पुरानें दस्तावेजों से सम्बन्धित संस्थाएँ (आरकाइव्स) भी इसका भरपूर लाभ उठा सकती हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में संग्रहालय शास्त्र से सम्बन्धित विभागों के लिए तो यह बहुत ही सार्थक है ही।

कला-दर्पण

वासुदेव बलवन्तराय स्मार्त

ज्योति चन्द्रेश ठाकोर

पृष्ठ : 212 + 16 पृ० चित्र

सजि. : रु० 200.00

ISBN : 81-7124-383-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वासुदेव स्मार्त

जन्म : सन् 1925 ई०-निधन : 22 अगस्त 1999 ई०

मुम्बई (तब की बम्बई) के जे०जे० स्कूल ऑफ आर्ट से पेन्टिंग का डिप्लोमा प्राप्त कर वासुदेव स्मार्त ने व्यावहारिक जीवन में प्रवेश किया। अहमदाबाद के सी०एन० विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य किया तथा बाद में का०हि०वि०वि० में कला-शिक्षक के रूप में ख्याति प्राप्त की। कॉलेज से लौटने पर कला की साधना में जुट जाते। जब कोई कृति आकार लेने लगती तो मित्रों को उसे दिखाते। पारम्परिक शैली वैसे भी अत्यन्त कष्टसाध्य है, फिर भी स्मार्त जी के चेहरे पर कभी थकान नहीं दिखाई देती थी। उलटे जब कलाकृति पूर्ण हो जाती तो उन्हें अपार सन्तोष होता था। पूर्णता (Perfection) पर उनका सदैव ध्यान रहता था। उनकी रेखाएँ समर्थ और चित्र को पूर्णता प्रदान करने वाली होती थीं। वासुदेव स्मार्त कला के प्रति समर्पित एक निष्ठावान एवं सम्पूर्ण कलाकार थे। कहते हैं किसी राष्ट्र की अस्मिता उसकी संस्कृति, कला एवं विचारों के कारण होती है। अत: विदेशी तत्त्व सदा इन्हीं चीजों पर प्रहार करते हैं। काल के अदृश्य हाथों से भी कला का ह्रास होता रहता है। ऐसे विनाशकारी तत्त्वों से कला को सुरक्षित रखने का दायित्व वासुदेव स्मार्त जैसे समर्पित कलाकारों का ही होता है। श्री वासुदेव स्मार्त ने दक्षिण गुजरात के मन्दिरों की कुछ दुर्लभ कलाकृतियों को प्रकाश में लाने का कार्य किया है जो अब तक वहाँ छिपी पड़ी थीं। उन्हें गुजरात का 'कलागुरु' कहा जाता है।

वे सारा जीवन भारतीय कला की वैभवशाली परम्पराओं के प्रशंसक और प्रवर्त्तक रहे। उन्होंने अत्यन्त निष्ठापूर्वक उनका अध्ययन किया और उनके गुणात्मक तत्त्वों को अपनी कलाशैली में आत्मसात कर लिया।

उन्हें यात्राएँ करने में भी अत्यधिक रुचि थी। वे जहाँ भी जाते अपनी स्केच-बुक अपने साथ रखते और वहाँ के सामाजिक जीवन, उत्सव, मेलों, रामलीलाओं आदि सांस्कृतिक धरोहरों को अपनी स्केच-बुक में उतार लेते।

भारत सरकार ने उन्हें गुफाओं, मन्दिरों और राजमहलों के भित्तिचित्रों के प्रलेखन-सम्बन्धी

योजना सौंपी थी जिसके अन्तर्गत उन्होंने बाघ, बदामी, सित्तनवासल, अजन्ता, कुसुम सरोवर, दक्षिण गुजरात के मन्दिरों और राजस्थान के महलों के भित्तिचित्रों पर काम किया। केन्द्रीय तथा राज्य की ललित कला अकादमी ने उन्हें पुरस्कारों से अलंकृत किया।

उन्होंने समाचर पत्रों में कला सम्बन्धी लेख लिखे तथा रेडियो पर उनकी तत्सम्बन्धी वार्त्ताएँ प्रसारित हुईं।

उन्होंने कलासम्बन्धी अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें 'कलादर्पण', 'रसिक प्रिया', 'पुष्पवाटिका', 'रूप संहिता' तथा 'भारतीय भित्ति-चित्र' प्रसिद्ध हैं।

'रूप संहिता' में 3000 डिज़ाइनों का संकलन है और इस विषय का एक दुर्लभ विश्व-कोश है।

प्रस्तुत पुस्तक **'कला दर्पण'** भारतीय तथा पाश्चात्य चित्रकला का दर्पण है। चित्रकला की समस्त क्रिया-प्रक्रिया का चित्रात्मक अध्ययन है। पुस्तक तीन भागों में विभाजित है।

प्रथम भाग में कला का रसग्रहण के अन्तर्गत कला और ललितकला के अन्तर को व्यक्त करते हुए चित्रकला के प्रमुख अंगों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

'द्वितीय भाग' में पश्चिमी कला के इतिहास के साथ चीनी कला का इतिहास भी दिया गया है।

'तृतीय भाग' में भारतीय शिल्प एवं स्थापत्य के साथ भारतीय चित्रकला के विकास का सर्वेक्षण है।

पुस्तक में सुप्रसिद्ध भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकारों की कलाकृतियों के हाफटोन चित्र हैं। चित्रकला के अध्येताओं के लिए यह महत्त्वपूर्ण कृति है।

भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती

सम्पादक :

सत्यप्रकाश मित्तल

पृष्ठ : 380

सजि. : रु० 380.00 ISBN : 81-7124-347-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतीय संस्कृति के इस संग्रह-ग्रन्थ में 42 विद्वानों के विचार संगृहीत हैं। इन विद्वानों में दिवंगत आचार्य नरेन्द्रदेव भी एक हैं, जिनकी स्मृति में गोष्ठी आयोजित कर इस विचार सम्पदा को प्राप्त किया गया। उनके पाँच लेखों का बहुमूल्य समुच्चय इस गोष्ठी का आधार-निबन्ध है जिसे परिशिष्ट में देखा जा सकता है।

ऐतिहासिक कारणों से आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की दौड़ में पिछड़ गये परम्पराप्रिय रूढ़िग्रस्त भारतीय समाज और उसकी विभिन्न संस्थायें तथा समुदाय, जाति-व्यवस्था तथा वर्ण-व्यवस्था, धर्म तथा सम्प्रदाय, नैतिक मूल्य तथा आचार-व्यवहार, ग्राम तथा नगर, परिवार तथा पड़ोस, शिक्षा तथा मनोरंजन आदि सब कुछ द्रुतगति से बदल रहा है।

संस्कृति की परिभाषा और भारतीय संस्कृति के स्वभाव और स्वरूप की विवेचना के अतिरिक्त विद्वानों ने यह बताने का सफल प्रयास किया है कि भारतीय संस्कृति किस प्रकार इस व्यापक और द्रुतगामी परिवर्तन के समक्ष अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए राष्ट्रीयता, विश्वबन्धुत्व, लोकतन्त्र और सामाजिक समता जैसे नये मूल्यों एवं तत्त्वों को आत्मसात् करने का प्रयास कर रही है और ऐसा करते हुए उसे किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अत: यह संग्रह भारतीय संस्कृति और समाज को समझने की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ बन गया है।

वाणी का क्षीर सागर

कुबेरनाथ राय

सम्पादक :

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 128

सजि. : रु० 120.00

ISBN : 81-7124-205-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कुबेरनाथ राय के निबन्धों के वैशिष्ट्य का एक महत्त्वपूर्ण आधार उसकी अद्भुत रचना-भंगिमा तथा भाषा-शैली है। उनमें अध्ययन-प्रसूत विचार-गाम्भीर्य और सहज स्फूर्त भाव उद्वेग का अद्भुत सामंजस्य है। कहीं-कहीं तो दोनों का ऐसा संश्लेष है कि विचारों की गहनता रम्य हो गयी है और भावों की रम्यता गहन।

श्री राय की भाषा अत्यन्त समृद्ध है। संस्कृत की तत्सम शब्दावली, बोल-चाल की हिन्दी का शब्द-भण्डार, किरात-निषाद, यक्ष, गन्धर्व संस्कृतियों के साक्ष्य का निर्देशन करने वाले अनेक शब्द, अंग्रेजी भाषा के जाने कितने शब्द सबने मिलकर श्री राय की भाषा को समृद्ध कर दिया है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के बाद हिन्दी-निबन्ध साहित्य को महत्त्व और गरिमा प्रदान करने वाले रचनाकारों में श्री कुबेरनाथ राय अपने व्यापक अध्ययन, मिथकीय समीक्षा-सामर्थ्य, प्रकृति सम्बन्धी सोच, लोक-सम्पृक्ति, संस्कृति-निष्ठा एवं चिन्तन कवित्व-संश्लेषणजनित विशिष्ट रचना भंगिमा के कारण प्रथम में अधिष्ठित हैं।

वाणी का क्षीर सागर महासागर में समाहित हो गया। कुबेरनाथजी की यह अन्तिम कृति है।

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प

विश्वनाथ पाण्डेय

पृष्ठ : 272

सजि. : रु० 250.00

ISBN : 81-7124-408-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

- **भारत सरकार द्वारा समादृत एवं पुरस्कृत**
- **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र मान पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत**

रेडियो विश्व का प्रमुख सम्प्रेषण माध्यम अपने उदय काल से ही रहा है और आज भी टी०वी० के अतिशय विकास के बावजूद भारत ऐसे देश में जहाँ कतिपय कारणों से टी०वी० की पहुँच देश की बहुसंख्यक जनता तक नहीं है, रेडियो ही एकमात्र माध्यम है जो जनमानस को समाचार, शिक्षा तथा मनोरंजन प्रदान करता है।

पिछले दिनों सुनामी लहरों के कहर ने जब अण्डमान-निकोबारवासियों को कुछ समय के लिये दुनियाँ से अलग-थलग कर दिया था, तब उस क्षेत्र में कार्यरत एकमात्र सम्प्रेषण माध्यम रेडियो ने बिछड़े और बिछुड़े लोगों को जोड़ने का कार्य किया। स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र ने हजारों-हजार प्रभावित परिवारों के लिये सन्देश प्रसारित किये और उस प्राकृतिक आपदा से लड़ने की शक्ति प्रदान की। इससे जान और माल दोनों को, आसन्न कहर से बचाया जा सका। आकाशवाणी वस्तुत: कई दिनों तक वहाँ के निवासियों के लिये 'आकाशवाणी' ही सिद्ध हुई।

आज आप मात्र एक छोटे से ट्रान्जिस्टर के माध्यम से क्षणभर में देश और दुनियाँ से जुड़ सकते हैं। रेडियो अगर आपके पास है तो पूरी दुनियाँ आपके पास है। एक निर्जन क्षेत्र में भी आप संसार भर के समाचार सुन सकते हैं, जान सकते हैं। यह अपने आप में एक अनोखा और अद्भुत आविष्कार है। विगत वर्षों में इस देश में और विश्वस्तर पर भी रेडियो ने सामाजिक और आर्थिक प्रगति को दिशा दी है।

रेडियो प्रसारण के विभिन्न आयाम हैं। माइक्रोफोन से रेडियो (ट्रान्जिस्टर) तक की यात्रा अत्यन्त रोमांचक है। 'एकोऽहं बहुस्याम' का अनुसरण करते हुए रेडियो बहुरूप में प्रकट होता है। अत: इसके विभिन्न अंगों एवं ध्वनि की यात्रा का अध्ययन अपने आप मे अत्यन्त आह्लादकारी है।

प्रस्तुत पुस्तक रेडियो के सभी पक्षों का अत्यन्त गहराई से अध्ययन प्रस्तुत करती है और जीवन के लिये सम्प्रेषण की आवश्यकता को भी उजागर करती है।

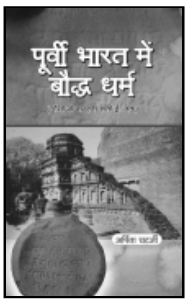

पूर्वी भारत में बौद्ध धर्म
(चौथी से बारहवीं शती ई. तक)

अर्पिता चटर्जी

प्रथम संस्करण : 2010 ई.
पृष्ठ : 280 + 32 पृ० चित्र
सजि. : रु० 500.00 **ISBN : 978-81-7124-747-9**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पूर्वी भारत शाक्य मुनि की जन्म स्थली रही है। सदियों तक बौद्ध धर्म यहाँ समृद्ध रहा तथा यहाँ से देशान्तर में प्रचारित हुआ। जिस समय भारत के अन्य भागों में सद्धर्म की ज्योति धूमिल पड़ रही थी उस समय पूर्वी भारत के बौद्ध केन्द्रों ने सफलतापूर्वक बौद्ध संस्कृति का वहन किया तथा इस धर्म को एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्म की ख्याति प्रदान की। तुर्क आक्रमण के पश्चात् बड़े-बड़े बौद्ध विहारों के ध्वस्त हो जाने पर भी इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ, क्योंकि पूर्वी भारत में बौद्ध धर्म समाज के निचले तबके तक पहुँच चुका था, फलत: बड़े-बड़े केन्द्रों के उजड़ जाने पर भी इसकी निरन्तरता यहाँ बनी रही। चौथी से बारहवीं शती ई० तक का काल बौद्ध धर्म में घटित होने वाले परिवर्तनों की दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील रहा। इस दौरान अनेक नवीन बौद्ध केन्द्र इस क्षेत्र में उभर कर सामने आए, जिनमें नालन्दा एवं विक्रमशिला प्रमुख हैं। इन केन्द्रों ने उत्तरकाल में सार्थक रूप से बौद्ध धर्म की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा। बौद्ध धर्म के साम्प्रदायिक पक्ष से लेकर उनकी पूजाविधि, देवमण्डल यहाँ तक कि प्रतिष्ठानों के स्वरूप में आए परिवर्तनों की दृष्टि से भी यह काल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत ग्रन्थ इस कालावधि में पूर्वी भारत के बौद्ध धर्म का विशद विवेचन है।

(पाठकों के पत्र का शेष)

'भारतीय वाङ्मय' अगस्त 2010 का अंक प्राप्त हुआ। साहित्यिक रुचि की पत्रिका होने के नाते आते ही सबकुछ छोड़कर पढ़ने बैठ गया। अंक सदा की भाँति पठनीय सामग्री से पूर्ण है। प्रेमचंद जयन्ती के अवसर पर आयोजित समारोह में विभिन्न तरीकों से उनका स्मरण कर श्रद्धांजलि देने का कार्य प्रशंसनीय है।

ये दाग़-दाग़ उजाला में व्यक्त ये विचार कि—'दुनिया की सभी भाषाओं में आरम्भ से अन्त तक जितना भी साहित्य रचा गया है, और आज भी लिखा जा रहा है उसकी चिन्ता का केन्द्र है—मनुष्य'। गम्भीरता से सोचने की बात है।

—मदन मोहन वर्मा
ग्वालियर, मध्यप्रदेश

दान से दानपारमिता तक
(बौद्ध परम्परा में दान के विविध आयाम)

अर्चना शर्मा

प्रथम संस्करण : 2010 ई.
पृष्ठ : 288 + 32 पृ० चित्र
सजि. : रु० 500.00 **ISBN : 978-81-7124-746-2**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत पुस्तक साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक सन्दर्भ में बौद्ध दान परम्परा के विविध आयामों को उद्घाटित करती है। दान एक सामाजिक संस्था है, जिसके उद्भव के विभिन्न कारक हैं। कतिपय विद्वानों ने इसकी भौतिकवादी व्याख्या पर बल देते हुए, इसके आध्यात्मिक पक्ष की उपेक्षा की है। इस पुस्तक में लेखिका ने उपर्युक्त उभय पक्ष को विवेचित किया है। बौद्ध धर्म के विकास में दानों एवं अनुदानों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। साथ ही बौद्ध धर्म में दान को अत्यधिक महिमामण्डित किया गया है, विख्यात पारमिता-सिद्धान्त में दान को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। आवश्यकता आधारित दान की प्रवृत्ति बौद्ध दान की परम्परा की विशिष्टता थी। प्रारम्भ में भिक्षु संघ की स्थापना के पश्चात् भिक्षुओं के भोजन, वस्त्र, औषधि, निवासार्थ उचित स्थान एवं दैनन्दिन जीवन की अन्यान्य वस्तुओं की अनेक आवश्यकताएँ थीं। इन वस्तुओं के दान के अनेक साक्ष्य प्राप्त होते हैं। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के साथ कुछ उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति भी आवश्यक थी, अत: देय वस्तुओं में पूजार्थ स्तूप, मूर्ति, धूप, दीप, पुष्पमालाओं एवं पुस्तक इत्यादि ने भी स्थान प्राप्त कर लिया। बौद्धदान परम्परा में इनके अतिरिक्त दुष्करदान का भी उल्लेख प्राप्त होता है यथा—अंगदान, जीवनदान एवं पुण्यदान। यही विशिष्ट दान बौद्ध धर्म में दान को दानपारमिता बना देते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में पालि एवं संस्कृत बौद्ध साहित्य में वर्णित कथाओं तथा उनके कलात्मक अंकन के माध्यम से दानपारमिता की अवधारणा पर विशद प्रकाश डाला गया है। दाता एवं प्रतिग्रहीता की पात्रता, दाता की सामाजिक स्थिति, दान के फल की अवधारणा का विकास एवं देय की समुचित व्यवस्था की विशद व्याख्या इस ग्रन्थ की विशिष्टता है। इस ग्रन्थ का मुख्य प्रतिपाद्य है, दान से दान पारमिता के क्रमिक विकास को रेखांकित करना। इसमें दान के सन्दर्भों का संयोजन इस प्रकार किया गया कि उपर्युक्त अवधारणा बिल्कुल स्पष्ट हो सके।

THE RISE & GROWTH OF HINDI JOURNALISM
(1826-1945)

Dr. Ramratan Bhatnagar
Editor
Dr. Dhirendra Nath Singh

Pages : 572
H.B. Rs. 800.00 **ISBN : 81-7124-327-4**
Publisher
VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN, VARANASI

Journalism is one of the most important part of modern social seience, Development of printing press, journalism came into existence and became a part of Mass Communication, So the role of journalism is many dimensional. Hindi journalism first appeared in 19th century. The first Newspaper being *Oodunta Martand*, whose first issue appeared on the 30th May 1826. It started the History of Hindi Journalism. Journalism was most integral part of Hindi Literature. Therefore, the Hindi Journalism has played a very important role in development of Hindi language, literature and Indian Freedom Struggle.

The writer has analysed and reviewed the facts in the light of the fullest possible background of social, religious, literary and political forces. This historiography is based on Time Sequence, Chronological order, Temporal Location, and thorough going critical study of the facts.

Besides, he analysed the contribution of journalism in the development of Hindi language and literature. Therefore, this work become more useful to Hindi Scholars as well as to students of journalism, Since the book has been originally written in English, it is very useful to foreign scholars as well.

Hindi journalism today has become an autonomous discipline; it is no more a unit or a subsidiary part of Hindi literature. At present, the teaching of journalism as an independent subject is being conducted by more than sixty universities in our country. Apart from this, Hindi journalism is also being taught in many foreign countries. Keeping in view these significant facts, Dr. Bhatnagar's book *The Rise and Growth of Hindi Journalism* is being republished to meet the demands of the academic world.

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

ब्रज-संस्कृति और लोक संगीत, डॉ० लक्ष्मीनारायण गर्ग, प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस-204101 (उत्तर प्रदेश), संस्करण : प्रथम, मूल्य : 500/-रु० मात्र

× × × वर्तमान उत्तर प्रदेश के पश्चिम-प्रभाग में स्थित ब्रज भूमि का क्षेत्र मध्यकाल से ही साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति की दृष्टि से समग्र उत्तर भारत को प्रभावित करता रहा है। प्रस्तुत प्रबन्ध में विद्वान लेखक ने इस विशिष्ट क्षेत्र के जन-जीवन में प्रचलित तीज-त्यौहारों के साथ उनकी लोककला में अभिव्यक्ति, नृत्य-संगीत में उनके सामंजस्य आदि का चित्रण करते हुए इनके सांगीतिक-पक्ष का विश्लेषण किया है। इसी क्रम में प्रचलित गीतविधाएँ, संगीत, छंद-वैविध्य, लय ताल-राग, लोक वाद्य आदि का पूर्ण विवरण दिया गया है। जन-संस्कृति एवं संगीत के क्षेत्र में यह प्रबंध शोधार्थियों एवं जिज्ञासुओं के लिये अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करता है।

मेरी बात, (आत्मकथा) प्रेमचंद, सम्पादक : सत्यनारायण मिश्र, प्रकाशक : जीवन प्रभात प्रकाशन, मुंबई-58, मूल्य : 15/-रु०

× × × प्रकाशित पुस्तिका कथाकार प्रेमचंद के द्वारा सम्पादित पत्रिका 'हंस' के सन् 32 एवं सन् 35 में प्रकाशित आत्मकथात्मक अंश लेकर छापी गयी है। जीवन प्रभात प्रकाशन के 'पुराने चावल' क्रम में यह बारहवीं पुस्तिका है जो कथाकार के प्रारम्भिक जीवन की झलक प्रस्तुत करती है।

हिन्दी विमर्श, डॉ० बाबूलाल वत्स, प्रकाशक : राष्ट्रभारती परिषद्, दयालबाग, आगरा-282005, मूल्य : 10/-रु० मात्र

× × × संवैधानिक संकल्प के बावजूद आज तक हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव नहीं मिल सका है। इसी दृष्टि से इस पुस्तिका में लेखक ने विभिन्न राज्यों के विद्वानों, साहित्यकारों, राजनेताओं से तत्सम्बन्धी मंतव्य प्राप्त किये हैं और हिन्दी को राष्ट्रभाषा-पद पर स्थापित करने हेतु प्रमाण प्रस्तुत किये हैं।

ईसुरी (अंक-17, वर्ष 2009-10), सम्पादक : आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रकाशक : हिन्दी विभाग, बुंदेलीपीठ, डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर-470003 (मध्यप्रदेश), मूल्य : 120/-रु० मात्र

× × × बुंदेलखण्ड के लोककवि 'ईसुरी' के नाम पर डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अन्तर्गत बुंदेलीपीठ द्वारा स्थापित इस वार्षिक पत्रिका का पिछले दो दशकों से प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका की विशेषता है कि यह अनुसंधान परक आलेखों के साथ रचनात्मकता को भी समाहित करती है। पत्रिका में साहित्य के साथ कला, संस्कृति पुरातत्त्व आदि समवेत-विषय भी पठनीय होते हैं। प्रस्तुत अंक 17 भी अपने कलेवर और विषय-वैविध्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

भावना शतक, पण्डित रत्न मुनिश्री रत्नचन्द्र जी महाराज, प्रकाशक : कॉलेज बुक डिपो, 83 त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-2, संस्करण : चतुर्थ, मूल्य : 100/-रु० मात्र

× × × उपनिषद् काल से ही समानान्तर 'जिन' दर्शन और यथाकाल विकसित जैन-धर्म ने भारतीय-परम्परा में ही धर्म, दर्शन एवं जीवन का सामंजस्य करते हुए अपनी मान्यताओं को बाह्याचार में भी प्रतिष्ठित किया। इसी क्रम में मुनिश्री रत्नचन्द्र जी महाराज कृत 'भावना शतक' में बारह भावनाओं और चार आनुषंगिक भावनाओं का उदाहरण पूर्वक सम्यक् विश्लेषण किया गया है। भारतीय धर्म-दर्शन के अध्येताओं एवं जैन-श्रावकों के लिये यह पठनीय तो है ही, सामान्य पाठक भी पुस्तक के अध्ययन के साथ ज्ञानार्जन कर सकता है।

सूचना

आगामी 'भारतीय वाङ्मय' नवम्बर-दिसम्बर अंक संयुक्तांक होगा।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 **सितम्बर 2010** **अंक : 9**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**